मुनि महाराजश्री हरखमुनिजी साहेबना सदुपदेशस

॥ अथ श्री ॥

॥ वीस स्थानक तप विधि ॥

मूळ ऊपरथी शुद्ध करी तैयार करनार,

पंडित हरिराज शर्मा

कलकत्ता.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

बाई गेटुबाई, बाबु रामचंदजी

सीताबचंदजीनी विधवा.

कलकत्ता.

(प्रथमावृत्ति प्रत २०००)

संवत १९६९ सने १९१३

अमदावाद-श्री जैन विद्याविजय मुद्रालयमा

शा. चुनीलाल अमथाशाए छाप्यु.

अमूल्य

आ पुस्तक कलकत्तावाळानी तरफथी छपाववा आवेलुं तेमां मुनी महाराजो तथा शास्त्री सुधारी मोकलता हता पण वीहारने लीधे मुनी महाराजोनां प्रुफ वहेलां मोडां आववाथी भुल थई होय तो ते शुद्धी पत्रकमां लखी छे माटे तेनी अमो माफी मागीए छीए.

श्री मोहनलालजी जैन पाठशाळानो सेक्रेटरी,

मोहनलाल माह्याभाई.

श्री

॥ प्रार्थनापत्रम् ॥

इस पुस्तकका एक प्रति जीर्ण, अशुद्धप्राय, अनेक भाषा भूषित श्री १००० पन्यास हर्षमुनीजीसे मेरेको मिलि उक्त मुनिजीके अनुरोधसे मैं यथामति इस पुस्तकका नमस्कार मन्त्र संस्कृतमें और सब विधि हीन्दी भाषामें लिखा इस पुस्तकमें मनुष्यका सहज दोष भ्रम प्रमादादिसे यदि कोई अशुद्धि रह गई हो उसको सज्जनगण सुधारकर अपना कृत्य करे यही हमारी प्रार्थना है ॥

क्योंकि,

गछत स्खलन क्वपि भवत्येव प्रमादत

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जना ॥

सज्जनोंका प्रर्थी हरिराज शर्मा.

वीस स्थानकना पदना जे जे राजाओए अभिग्रह कर्या तेमनां नाम नीचे मुजबः—

१ अरिहंत पदनो उपासक देवपाळराजा—अभिग्रह रिषभदेवस्वामीना दर्शनथकी.

२ सिद्ध महाराजना पदनो उपासक हस्तिपाळ राजा—समेतशीखरादि तीर्थनी यात्रा करतां तीर्थंकरपद बांध्युं.

३ प्रवचन पद उपासक जिनदत्त शेठ—चतुर्विध संघनी भक्ति करवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

४ आचार्यपद उपासक पुरुषोत्तम नामना राजर्षि-गुरुभक्ति करवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

५ स्थविरपद उपासक पद्मोत्तरराजा—मुनिवात्सल्य करवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

६ उपाध्यायपद उपासक महेन्द्रपालराजाए साधु प्रश्ने बहुश्रुतनुं वात्सल्य करवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

७ साधुपद उपासक वीरचन्द्रराजाए मुनिवात्सल्यने दीक्षा लइने करवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

८ ज्ञानपद उपासक जयंतराजाए दीक्षा लइ ज्ञान उपयोगमां रहेवुं ते अभिग्रह लेवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं

९ दर्शनपद उपासक हरीविक्रम राजर्षि दीक्षा लइने सम्य त्व दृढ पाळ्युं तेथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

१० विनयपद उपासक धन नामा मुनिए मुनिराजोनो विनय करवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं

११ चारित्रपद उपासक भाव आवश्यकमां दृढता राखीने अरूणदेवमुनिए तीर्थंकर गोत्र बांध्युं

१२ ब्रह्मचर्यपद उपासक चंद्रवर्मा मुनिए शीलव्रत दृढताथी पाळवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

१३ क्रियापद हरिवाहन राजर्षिए ध्यान क्रियामां दृढ रहेवाथी तीर्थंकर गोत्र बाध्युं

१४ तपपद, कनककेतु राजाए दीक्षालइ वारभेदे तप

आराधवानो जीवित पर्यंत अभिग्रह लेवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

१५ सुपात्रदानपद हरिवाहन (नरवाहन) राजाए दीक्षालइ साधुओने आहार आप्या पछी पोते आहार करवानो अभिग्रह लेवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

१६ वेयावच्चपद जीमुतकेतुए दिक्षा लइ आराधवाथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

१७ संघपद (समाधिपद) पुरंदरराजाए दीक्षा लइ साधु साधवी विगेरे संघनी भक्ति करी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

१८ ज्ञानपद अपूर्व श्रुतवडे करी सागरचंद्र राजर्षिए तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

१९ श्रुतपद रत्नचूडे श्रुत भक्तिथी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

२० तीर्थपद उपासक मेरुप्रभ राजर्षिए शासननी उन्नति माटे चार अभिग्रह करी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं.

उजमणानी वस्तुनी विगत.

२० देरासर[देवोपकरण]
२० कटोरी
२० रकेबी
२० जीर्णोद्धार
२० चन्दनना कंक्मा
२० वीसस्थानकजीनाघरा
२० जीन बिम्ब
२० मुखकोश
२० सिंहासन
२० घटणी
२० स्थापना
२० ताम्बाकुन्डि
२० आरती
२० मङ्गलदीप
२० पुठिया
२० धोती
२० घंटा
२० धर्मशाला
२० अङ्गलुहना
२० तिलक
२० कलश
२० मुकुट
२० केशरका पन्निका
२० वालाकूंची
२० नौकारवाली
२० आचमनी
२० अष्टमाङ्गलिक
२० धूपदानी
२० चन्द्रवा
२० तोरण

२० रूमाल
२० छत्र
२० मोरपिछी
२० थाली
२० दिवी
२० दणासर
२० छोटकलश
२० बरास
२० प्याला
२० रूपाकावर्क
२० ज्ञानोपकरण
२० गुणनेकी टीप
२० पुछी
२० सापमा
२० लेखनी
२० चाकू
२० खम्मिया

२० वासकुपी
२० चामर
२० वाटकी
२० ओरसिया
२० ध्वजा
२० हांडा
२० अगरबत्तीका पम्मिका
२० अगर
२० प्रस्तावना
२० सोनावर्क
२० पुस्तक
२० पुछा
२० छवणी
२० सुपमी
२० कतरनी
२० पुस्तक रखवाना मावमा
२० पाटली

२० हिङ्गिलाना पन्किा	२० पाटला
२० ओलिआ	२० पाटी
२० डोरा	२० चाबुकी
२० वत्तरणा	२० काम्बी

चारीलोपकरण.

२० काम्बली	२० पानां
२० पठेमी	२० झोली
२० पल्ला	२० संथारिआ
२० चोलपट्टा	२० कपमा
२० काम्बली ओघानी	२० मुहपत्ती
२० दांमा	२० चारोला
२० तर्पणी	२० सामायिक करवानीदांमी
२० चारोलानी दांमी	२० मुंहपत्ती
२० कटासना	२० माघमी नौकारवालीनी
२० मामा स्थापनाजीनो	

ये उपगंत यथाशक्ति.

ये उपगन्तनी गुरुगमसे देखलेना ॥

शुद्धि पत्र.

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६	३	वार	कर
,,	,,	नमस्कार	नमस्कार करे.
७	१५	अर्हन्त	अरहन्त.
८	१३	औरे	और
९	५	यूत धान्य से	पूत धान्य से
९	१०	बिम्ब तथा करावे.	बिम्ब करावे.
१३	६	एवेरी	अवैरी.
१६	४	वर्याक	वर्णक
१६	१२	पिटकाय	पिट्ठीकाय
२०	३	हृदय	हृदयाय
२१	११	परमेष्ट	परमेष्ठी
२३	२	अतिसंविभाग	अतिथीसंविभाग
२५	११	लोकिक	लौकिक
२५	१२	,,	,,
३१	९	सुविहिग	सुविहितग

,,	१२	जम्य ग्रन्थोको	जम्य ग्रन्थिको
३७	१२	अलब्ध	अलुब्ध
४५	४	शप	शेप
४९	७	मुनिनि	मुनि
५१	४	कष्ट	कष्टं
,,	६	चमत्कार	चमत्कारं
,,	७	पुस शांऽकरण	अप्रशांऽ करण
५३	१२	प्रतिबोधनं	प्रतिबोधन
,,	१४	पापोदेयात्	पापोदयात्
५४	५	गृहीतं	गृंहीतं
,,	६	चैत्यं	चैत्यंतस्य
,,	७	तीर्थायंतै गृहीतं	तीर्थायिंस्यतै गृंहीतं
५६	५	व्रतं	व्रत
,,	९	मुड्राहित	मुद्राहित
५७	१५	फलं	फलस्य
६२	१५	नपुण	निपुण

७३	६	श्चित्त	श्चित्ता
७०	११	चारित्राय	चारित्र
८०	११	आरम्भिका	आरम्भिक
८२	३	पकार	प्रकार
८५	७	तपा	तपो
८६	१५	निरोध कर करके	निरोध करके
९२	१	उत्पादक,	उत्पाद,
९५	११	सें	को
९६	१८	अपराधीक	अपराधीकों
९७	९	बत्तीस	अष्ट
११२	१	करोण	करोड
,,	१३	भोक्तत्व,	भोकतृत्व,
११३	४	सेनारव्य	सेनाख्य
११४	१४	देवं,	देवे,
११९	१२	पविवार	परिवार
१२०	१२	इयादि	इत्यादि

॥ श्री ॥

॥ विसस्थानक तप आराधना विधिमां मदद. ॥

श्री तिर्थंकर पद उपार्जन करवा जे भव्य जीवो श्री विसस्थानकजीनी ओली करवा ईछा राखे तेमने सम्पूर्ण विधिनी माहेतगारी आपवा बनारसमां कुशलजी महाराजना भंडारमांथी हस्त लिखित प्राचीन प्रत जेनी आ पुस्तक नकल छे, ते बाबु रामचंदजी शेठ श्री कलकत्ता लावेल ते छपाववा श्री १०८ मोहनलालजी महाराजना शिष्य पन्यासजी श्री १०८ हरखमुनिजी पासे संशोधन करावी छपाववामां आवी तेमां जेणे उदारताथी मदद कीधी तेना नाम नीचे मुजब–

रू. १००) बाई शेठुबिबि ते कलकत्ता वाला बाबु रामचन्दजी सीताबचन्दजीनी विधवा आ पुस्तक छपावा प्रयास करनार तरफथी

रू १००) राणी पानाकुमारी (ते राजा विजयसिंहजीनी पत्नी) अजीमगंजवाला तरफथी.

१००) बाई फुलकुमारी (ते रायबहादुर मेघराजजी जालमसिंहजनी विधवा) अजीमगंजवाला तरफथी.

१००) राणी मीनाकुमारी (ते राय धनपतसिंहजी बहादुरनी विधवा) तरफथी.

७५) मीनाबाई अजीमगंजवाला तरफथी.

५१) बाई फुलकुंवरबाई (ते रतलामवाला शेठ चान्दमलजीनी विधवा) तरफथी.

५०) रतनलालजी कन्हैयालालजी बम्र कलकत्तावाला तरफथी बाई पारवतीबाईने.

२५) बाई नगीनाबाई (ते अजीमगंजवाला बाबु अमरचंदजी बठावतनी पत्नी) तरफथी.

२५) बाबु किरतचंदजी वैद्यनी पत्नी अजीमगंज वाला तरफथी.

२५) बाई धन्नूबाई (ते हीरालालजी चून्नीलाल जीकी पत्नी) कलकत्ता.

२५) जमावबाई मोतीचंदजीनी वुआ तरफथी कलकत्ता

२५) कुन्नूबाइ शेठ पदमचंदजीनी विधवा कलकत्तावाला तरफथी

२५) बाई चुन्नीबाई ते झवेरी सीतावचंदजीनी विधवा कलकत्तावाला तरफथी

२0) बाबु धनुलालजी बीहारवालेनी माताजी तरफथी

२0) गुलाबबाई कलकत्तावाला तरफथी

२0) बाबु कीरतचंदजी वह्नावतना घरवाला अजीमगंजवाला तरफथी

१५) बाबु नेतमलजी रतलामवाला तरफथी

१५) बाई छदीबाई इन्द्रचन्दजी सावन सुखानी विधवा अजीमगंजवाला तरफथी

वगेरे १५) रूपयाथी कम देनारोना नाम नथी पण एवा परचुरण मदद मलवाथी आ पुस्तक छपाव्यु छे.

जे भाईओ तथा बहेनोने आ पुस्तक जोईये तेमणे नीचे लखेले ठेकाणे लखवाथी आ पुस्तक वगर किमते मोकलवामां आवशे.

१ बाबु माधवलालजी दुगड केनींगस्ट्रिट नंबर३७ कलकत्ता.

२ राय धनपतसिंहजी महाराज बहादुरसिंहजी दुगड-जियागंज.

३ राजा विजयसिंहजी दुधेडिया-राजबाग-अजीमगंज.

४ मेघराजजी जालमसिंहजी आरमनी स्ट्रीट नंबर ११ कलकत्ता.

ली० उपर लीखी बेना,
छपावी प्रकाशित करनार
द. गेटुबाई—शम.

———

१ अरिहन्त पदके आराधनसे देवपालादिक सुखी हुए

२ सिद्ध पदके आराधनसे हस्तिपाल राजाको- ज्ञान हुआ.

३ प्रवचन पदके आराधनसे भरतादिकों केवल ज्ञान हुआ

४ आचार्य पदसे पुरुषोत्तम नृप तीर्थकर नामकर्म उपार्जन किया

५ स्थविर पदके आराधनसे पद्मोत्तर राजा तीर्थ- कर पद पाया.

६ उपाध्याय पदसे महेन्द्रपालराजा देवेन्द्र हुआ.

७ साधु पदके आराधनसे वीरभद्र तीर्थकर हुआ.

८ ज्ञान पदसे जयन्त राजा तीर्थकर हुआ.

९ दर्शनपदसे हरिविक्रम जीन हुआ.

१० विनय पदसे धन्नो मोक्ष गया.

११ चारित्र पदसे करुण देव जीनवर हुए.

१२ ब्रह्मचर्य पदसे चन्द्रवर्मा जीन हुआ.
१३ क्रियापदके आराधनसे हरिवाहन तीर्थंकर हुआ.
१४ तपपदसे कनककेतु तीर्थंकर हुआ.
१५ गौतम पदसे हरिवाहन जीनवर हुआ.
१६ जीन्न पदसे जीमूतकेतु जीन हुआ.
१७ संयम पदसे पूरन्दर तीर्थंकर हुआ.
१८ ज्ञान पदसे सागरचन्द्र तीर्थंकर हुआ.
१९ श्रुत पदसे रत्नचूड़ तीर्थंकर हुआ.
२० तीर्थ पदसे मेरुप्रभ तीर्थंकर हुआ.



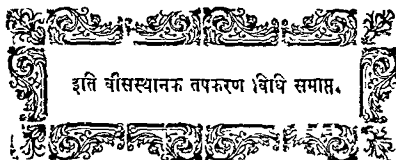
॥ अथ वीस स्थानक तपकरण विधि लिख्यते ॥



प्रथम शुभ मुहूर्तके दिन नंदीस्थापन पूर्वक सुविहित गुरुके पास वीसस्थानक तप विधि पूर्वक उच्चरे एक ओली दोमाससें लेकर (यावत्) ६ मासें पूरी करे, कदाचित् ६ मास मध्ये पूरी न कर सके तो वह ओली गिनती नहीं आवे और नवी ओली करनी पमे। एक ओलीके वीस पद है (तिहां) कोई वीस दिनमें वीशों पद जूदा२ गिणें। कोई विशों दिनमे एकज पद गिणें। दूसरे वीशों दिनमें दूसरो पद, (ऐसें) वीशों पदकी वीश ओली करे। तिहां पदाराधन प्रबल शक्तिवन्त अट्ठम तप करिके आराधै। वीश अट्ठमें एक ओली होय (ऐसे) वीश ओली (४००) अट्ठमें आराधै। और तिससे हीन शक्ति छट्ठ तप करके आराधै। तिससे हीन शक्ति चौविहार उपवास करके आराधै। तिससे हीन शक्ति त्रिविहार उपवास करके आराधै। तिससे हीन शक्ति आंबिल

(तथा) तिविहार एकाशणा करके आराधै। तिहां शक्ति-वान् प्राणी सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे (हीनशक्ति) दिन पोसह करे। वीशों पद पोसह सहित आराधै। (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो (तो) आचार्य १ उपाध्याय २ थिवर ३ साधु ४ चारित्र ५ गौतम ६ तीर्थ ७ यह सात थानक तो पोसहज करके आराधै। तथा शक्ति न होतो तिस दिन देशावगासिक करे। सावद्य व्यापार त्यजे। सोपिण न होतो यथाशक्ति तप करी आराधै। अपणी हीनता भावै। (तथा) मृतक जातकका सूतकमें उपवासादि तप गिणें न जावै। स्त्रयां पिण ऋतु समयका तप न गिणें (तथा) तपके दिन पोसह सहित करे (तो) बहुत श्रेयकारी है। सो न हो सके तो तपके दिन उभय टंक पडिक्कमण करे तीन टंक देववन्दन करे दो सहस्र (२०००) एक पदका जप करे। ब्रह्मचर्य पालै, भूमि शयन करे, तपके दिन अति सावद्य आरम्भ व्यापार न करे, असत्य न बोले, सर्व दिन तपपद

गुण कीर्तनमें रहै। (तथा) तपके दिन पोसह करे (तो) पारणोंके दिन जिनभक्ति करके पारणो करे (जो) तप-के दिन पोसह न हो (तो) उसदिन श्री जिनभक्ति करे करावै भावना भावै। (तथा) तपके दिन पदके गुणभेद प्रमाण संख्याई काउसग्ग करे (तावन्मात्र) तद्गुण स्मरण पूर्वक खमासण देई वन्दना करे। उस पदका गुण याद करके उदात्त स्वरे स्तवना करे। हर्षित रहै॥


इति वीसस्थानक तपकरण विधि समाप्त.

॥ अथ वीस पदाराधन विधि. ॥

वीस पदमें प्रथम अरिहन्ताणं पद है, इस पदका वीसमाला जप करके श्री अरिहन्तके बारह गुणोंका स्मरण कर नमस्कार करे सो क्रमसे आगे लिखाहै ॥

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्य शोभिताय श्रीमदर्हते नमः

२ पञ्चवर्ण जानुदघ्न पुष्प प्रकर प्रातिहार्य शोभिताय श्री.

३ अति मधुर द्रव्य माधुर्य्यतोऽपि मधुरतम दिव्यध्वनि प्रातिहार्य शोभिताय श्री.

४ हेम रत्नजटित दण्डस्थितात्युज्वल चमर युगल वीजित व्यजन क्रियायुक्त सत्प्राति.

५ सुवर्णदल रत्नजटित सदा सहचारि सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्री.

६ तरुण तरणि तेजसोऽप्यति भास्कर तेजोयुक्त भामण्डल सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्री

७ दुन्दुभि प्रभृत्यनेक आकाशस्थित वादित्र वादनरूप सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्री

८ मुक्ताजाल झुम्बनक युक्त छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभिताय श्री.

९ स्वपरापाय निवारकातिशय धराय श्री

१० पञ्चत्रिंशद गुणयुक्त सुरासुर देवेन्द्र नरेन्द्राणां पूज्याय श्री

११ सर्व भाषानुगामि सकल संशयोच्छेदक वचनातिशयाय श्री

१२ लोकालोक प्रकाश केवलज्ञानरूप ज्ञानातिशयेश्वराय श्री

इस प्रकार बारह वन्दना करनेके बाद, अरुहन्त, अरहन्त, देवाधिदेव, परमेश्वर परम करुणा निधान, महागोप, महामाहण, महानिर्यामक, महा सार्थवाह,

जगद्वैद्य, जिनेश्वर, तीर्थङ्कर, विश्वम्भर, विश्वपते, विश्वोत्तम, त्रिकालवित्, सर्वज्ञ, सर्वदर्शिन, देवाधिदेव, पुरुषोत्तम, वीतराग, जगन्नाथ, जगद्बन्धो, जगत्तारण, बुद्ध भगवत विश्वानन्दिन्, सहजानन्दी, शुद्धचेतना, धर्ममयी, व्यक्तस्वभावमयी, धर्मरत्न रत्नागार, धर्मदेशक, भाव धर्मदाता, परमात्मन्, परमदर्शी, परमगुरो, परमोपकारिन्, परमसंसारतारक, अशरणशरण, तरणतारण, भवभयहरण, इत्यादि भगवत् सहस्र नामका पाठ करे और अगणित गुण गणोंसे भूषित श्रीमदर्हत जीवकों प्रतिक्षणमें वन्दना हो और हमारा त्राण, शरण, गति, मति, सब अरिहन्त भगवान है, और श्री अरिहन्त भगवान् हमारी श्रद्धा सफल करे. इत्यादि प्रकारसे भगवानकी स्तुति करे और उसीदिन चौवीस लोगस्स का काउस्सग करे और दिनरात श्वेतवर्ण अरिहन्तका गुण कीर्तन करे और पारणाके दिन अष्टप्रकारी, सत्रहप्रकारी, एकवीसप्रकारी, अष्टोत्तरी आदि पूजा भक्ति

यथाशक्ति करे, नूतन मुकुट कुण्डल प्रभृति भूषण चढावे. छत्र, चमर, रत्नतिलक चढावे, शरीरमार्जन के लिए वस्त्र तथा चन्द्रवा चढावे, समवशरणका रचना कराकर तीसरे शालामें सिंहासनपर प्रभुको विराजमान कराके आगे मन्त्र पूतधान्यसे प्राकारका रचना करे और इन्द्रध्वज चढावे रौप्यमयी, अदनमयी अष्ट माङ्गलिक चढावे, सुन्दर वर्ण गन्धयुक्त पुष्प फलादि सामान रखे, और विविध प्रकारका पक्वान्न चढावे नाणा रमें यथाशक्ति द्रव्य रोपे केवलज्ञानका उत्सव करे और जिन बिम्ब करावे, इस प्रकार ६ मास पर्यन्त अरिहन्त पदके आराधनसे सर्वेष्ट सिद्धि होति है अ-रिहन्तपदके आराधनसे देवपालादिक सुखी हुए.

॥ इति प्रथम पदाराधन विधि ॥



॥ अथ द्वितीय पदाराधन विधि ॥

नमोसिद्धाणं यह दूसरा पद है. इस पदका वीस माला जप करके पूर्ववत् सिद्धके गुणोंका स्मरण पूर्वक वन्दना करे वन्दनाका क्रम इस प्रकार है ॥

१ समचतुरस्रादि षट् संस्थान रहिताय श्री सिद्धायनम ६

२ वर्णादि पञ्च रहिताय श्री ११

३ सुरभ्यसुरभिगन्ध रहिताय श्री १३

४ रसादि पञ्च रसरहिताय श्री १८

५ स्पर्शाद्यष्ट रहिताय श्री २६

६ त्रिकवेद रहिताय श्री २९

इस प्रकार सिद्धके २९ गुणोंके स्मरण के बाद (लोगस्स १५ का काउस्सग) करे क्योंकि सिद्धका पन्द्रह गुण कहा है अथवा आगे लिखे प्रकारसे

वन्दना करे जैसे.

१ मतिज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नम

२ श्रुतज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नम.

३ अवधिज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नम

४ मन.पर्यवज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नम

५ केवलज्ञानावर्णि कर्म रहिताय नम

६ निद्रादर्शनावर्णि कर्म रहिताय नम.

७ निद्रानिद्रा दर्शनावर्णि कर्म रहिताय नम.

८ प्रचलादर्शना वर्णि कर्म रहिताय नम.

९ प्रचला प्रचला दर्शनावर्णि कर्म रहिताय नम.

१० स्थानर्द्धि दर्शनावर्णि कर्म रहिताय नम.

११ चक्षुदर्शनावर्णि कर्म रहिताय नम

१२ अचक्षुदर्शनावर्णि कर्म रहिताय नम

१३ अवधि दर्शनावर्णि कर्म रहिताय नम.

१४ केवलदर्शनावर्णि कर्म रहिताय नम

१५ शातावेदनी कर्म रहिताय नम.

१६ अशातावेदनी कर्म रहिताय नमः
१७ दर्शन मोहनी कर्म रहिताय नमः
१८ चारित्र मोहनी कर्म रहिताय नमः
१९ नरकायुः कर्म रहिताय नमः
२० तिर्यगायुः कर्म रहिताय नमः
२१ मनुष्यायुः कर्म रहिताय नमः
२२ देवायुः कर्म रहिताय नमः
२३ शुभनाम कर्म रहिताय नमः
२४ अशुभनाम कर्म रहिताय नमः
२५ उच्चैर्गोत्र कर्म रहिताय नमः
२६ नीचैर्गोत्र कर्म रहिताय नमः
२७ दानान्तराय कर्म रहिताय नमः
२८ लाभान्तराय कर्म रहिताय नमः
२९ भोगान्तराय कर्म रहिताय नमः
३० उपभोगान्तराय कर्म रहिताय नमः
३१ वीर्यान्तराय कर्म रहिताय नमः

इस प्रकार वन्दना करे बाद श्री सिद्ध भगवान की स्तुति करे जैसे अनन्त ज्ञानमयी, अनन्त दर्शन-मयी, अनन्त चारित्रमयी, अनन्त अव्याबाध सुखमयी, अनन्त अरुपि, शुद्ध चैतन्य विलासमयी, अनन्त अगुरु लघु गुणमयी, अनन्ताक्षय स्थितिमयी, अनन्तवीर्य शक्तिमयी, अनाद्यनन्त नित्यानन्द, अविनाशि, अवैरी, अवेदि अनुपाधि, अजर, अमर, अव्यय, अकलङ्क, अरोगी, अक्लेशी, अयोगी, अबन्धी. असङ्गी, अकामी, चिदानन्दघन, चिद्भोगी, चिद्विलासी, चिद्रूपी, अचल, अमल, चरमज्योति· परमात्मा, परमेश्वर, सहजानन्दी, सहजस्वरूपी, पूर्णानन्द सकललोकाग्रस्थायी, अनन्त गुणनिधान, ऐसे सिद्धभगवानको हमारी प्रतिक्षण वन्दना रहे, यही स्वरुप हमारा साध्य है इसी स्वरूपकी सेवा हमारा परम साधन है इन्ही के नाम स्मरणसे हमारा जन्म सफल है। इस प्रकार स्तुति करनेके बाद रातदिन रूपातीत स्वरूप रक्तवर्णका ध्यान

करे और पारणाके दिन चौवीस तीर्थंकरोंके १४५२ गण-घरोंका पूजन करे। तथा सिद्धक्षेत्र श्री शत्रुंजय, गिरिनार, आबु, अष्टापद, समेतशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी, कोटिशीलाकी स्थापना करके अष्टप्रकारी प्रभुकी पूजा यथाशक्ति भक्तिपूर्वक करे पञ्चवर्ण धान्यसें त्रिलोक नालिका पट्ट रचना करे तथा घृतका मेरु पर्वतकी रचना करे और सिद्ध कल्याणका उत्सव करके सिद्धपद उच्चारण करके द्रव्य याचकको दे. सिद्ध पदके आराधनसे हस्तिपाल राजाको ज्ञान हुआ.

॥ इति द्वितीय पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ तृतिय पदाराधन विधि. ॥



नमो पवयणस्स. यह तृतियपद है इस पदका वीस माला जप करके प्रवचन पदके गुणोंका स्मरण पूर्वक

वन्दना करै जैसे–

१ सर्वत· प्राणातिपात विरताय नम
२ सर्वतो मृपावाद विरताय नम·
३ सर्वतोऽदत्तादान विरताय नम·
४ सर्वतो मैथुन विरताय नम·
५ सर्वत· परिग्रह विरताय नम·
६ देशत· प्राणातिपात विरताय नमः
७ देशतो मृपावाद विरताय नमः
८ देशतोऽदत्तादान विरताय नम·
९ देशतो मैथुन विरताय नम·
१० देशतः परिग्रह विरताय नम
११ दिशि परिमाणव्रत युक्ताय नम·
१२ भोगोपभोग परिमाणव्रत युक्ताय नमः
१३ अनर्थदण्ड विरताय नम
१४ सामायिकव्रत युक्ताय नम
१५ देशावगासिव्रत युक्ताय नमः

१६ पोसहोपवासीव्रत युक्ताय नमः

१७ अतिथिसंविभाग व्रत युक्ताय नमः

१८ विधि सूत्रागमाय नमः

१९ वर्णक सूत्रागमाय नमः

२० भय सूत्रागमाय नमः

२१ उत्सर्ग सूत्रागमाय नमः

२२ अपवाद सूत्रागमाय नमः

२३ उभय सूत्रागमाय नमः

२४ उद्यम सूत्रागमाय नमः

२५ सर्वनय समूहात्मक श्री प्रवचनाय नमः

२६ सप्तभङ्गी रचनात्मकाय नमः

२७ द्वादशाङ्ग गुणी पिठीकाय नमः

इन पदोंको उच्चारण पूर्वक वन्दना करे फिर काउसग्ग २७ का लोगस्स करे पश्चात् प्रवचनकि स्तुति करे. जैसे जिसकों श्री जिनेश्वर परमेश्वरजी स्थापन

किया, और जो चतुर्विध संघ तथा श्रीमुखसे ज्ञापित हुआ, जो स्याद्वाद मुद्राङ्कित श्री सिद्धान्त कहा, तदनुकूल श्रद्धा प्रवर्तन करे, जो श्री संघ प्रवचन कहा जाता है वह कैसा है, जैसे रत्नोंकी खानि, रोहणाचलके समान गुणोंकी खानि श्री प्रवचन है, जैसे तारोंका स्थान आकाशके समान गुणोंका स्थान श्री प्रवचन है, जैसे कल्पवृक्ष सदा स्वर्गमें रहता है वैसेही सर्व गुण सर्वदा श्री प्रवचनमें रहते है, कमलोंका आकर सरके समान श्री प्रवचन गुणोंका आकर है जैसे जलका अविनाशि कोश समुद्र है वैसे गुणोंका खजाना श्री प्रवचन है, तेजपुञ्ज जैसे सूर्य है वैसे गुण पुञ्ज श्री प्रवचन है, सकल बीजोत्पत्तिके अवन्य हेतु पुष्करावर्त के समान सम्यग्गुण बीजोत्पत्तिका हेतु श्री संघभक्ति है, जैसे अमृतपानमे सर्व विष नष्ट होता है, प्रवचनामृतपानसे परम मिथ्यात्वका नाश होता है, ऐसा श्रीप्रवचन संघ अपार ससाररूपी समुद्रको उतर कर साश्वत् विलासी

मुक्तिपदमें विराजता है ऐसा श्री संघजीको प्रतिक्षण हमारी वन्दना रहे और भव २ में श्री संघमें हमारी भक्ति बनी रहे. इस प्रकार स्तुति करके श्री सिद्धान्तका विधिपूर्वक कर्पूरादि सुगन्ध वास धूपादिसे पूजन करे और यथाशक्ति पुस्तकका उपकरण करावे, प्रभावना करे, साधु साध्वी प्रमुखको औषध, अन्न, वस्त्र, प्रभृति, द्रव्य यथायोग्य देवे और दिनरात संघके गुणग्रामको गान करे. इस प्रकार तृतीयपदके आराधनसे सर्वेष्ट सिद्धि होती है. प्रवचन पदके आराधनसे भरतादिकों केवलज्ञान हुआ ॥

॥ इति तृतीय पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ चतुर्थ पदाराधन विधि. ॥



नमो आयरियाण. यह चतुर्थ पद है. इस पदका बीस माला जप करके भावाचार्यकी ३६ गुणोंका स्मरण पूर्वक वन्दना (खमासमणा) करे जैसे –

१ प्रतिरूप गुणधराय श्री आचार्याय नम.
२ तेजस्वि गुणधराय श्री आचार्याय नम
३ युगप्रधानागमाय श्री आचार्याय नम
४ मधुरवाक्यगुणधराय श्री आचार्याय नम
५ गम्भीरगुणधराय श्री आचार्याय नम.
६ सुबुद्धिगुणधराय श्री आचार्याय नम
७ उपदेश तत्पराय श्री आचार्याय नम
८ अपरिश्रावि गुणधराय श्री .
९ चन्द्रवत्सौम्यत्वगुणधराय श्री आचार्याय नम
१० विविधाभिग्रहमतिधराय श्री आचार्याय नम
११ अविकथ्यक गुणधराय श्री आचार्याय नम

१२ अचपल गुणधराय श्री आचार्याय नमः
१३ संयम शील गुणधराय श्री आचार्याय नमः
१४ प्रशान्तहृदयाय श्रीमदाचार्याय नमः
१५ क्षमागुणाय श्रीमदाचार्याय नमः
१६ मार्दवगुणाय श्रीमदाचार्याय नमः
१७ आर्जवगुणाय श्री ,,
१८ निर्लोभतागुणाय श्री ,,
१९ तपोगुणयुताय श्री ,,
२० संयमगुण युताय श्री ,,
२१ सत्यधर्म युक्ताय श्री ,,
२२ शौचगुण युक्ताय श्री ,,
२३ अकिञ्चन गुणयुताय श्री ,,
२४ ब्रह्मचर्य गुणयुताय श्री ,,
२५ अनित्य भावना भाविताय श्री ,,
२६ अशरण भावना भाविताय श्री ,,
२७ संसार भावना भाविताय श्री ,,

२८ एकत्व भावना भावितायं श्री ,,
२९ अन्यत्व भावना भावितायं श्री ,,
३० अशुचि भावना भावितायं श्री ,,
३१ आश्रव भावना भावितायं श्री ,,
३२ संवर भावना भावितायं श्री ,,
३३ निर्जर भावना भावितायं श्री ,,
३४ लोकस्व भाव भावना भावितायं श्री ,
३५ बोधिदुर्लभ भावना भावितायं श्री ,
३६ दुर्लभ धर्मसाधक भावना भावितायं श्री,,

इस प्रकार गुण स्मरण पूर्वक वन्दना करके आचार्यकी स्तुति करे जैसे श्री आचार्य परमेष्ठी सकल मुनी श्रेष्ठ, गुणगणी ज्येष्ठ, शास्वत धीर, प्रवचन प्रकाशक, प्रवचनाधार, साधनैश्वर्यभूता आलम्बन भूत, मेढी भूत, सारण, वारण, चोयण, पडिचोयणा कुशल, तीर्थंकरोपम, बहुश्रुत, क्रियाधार, धर्माधार, स्वपर समयज्ञ,

परहृदयाकूतज्ञ, द्रव्य क्षेत्र भाव कालज्ञ, कुतियांवण[१] समान, सूरिमन्त्रधारी, गणधर गणी, गछस्तम्भपद धारी, निर्दम्भ, श्रेष्ठ, सुगुरु गणि, पिटकधारी, शासनोन्नतिकारी, शासनोद्योतकारी. अर्थधर, सूत्रधर, सदनुयोगधर, शुद्धानुयोगधर, ज्ञानभोगी, अनुभव योगी, अनूद्वान प्रवचनद्वार, आज्ञाएेश्वर्यधर, भट्टारक, भगवान, महामुनि, मुनिसेव्य, मुनिनायक, गछभार धुरन्धर, मार्गज्ञ, मार्गदर्शी, निश्चयानुभव स्पर्शी, अक्रोधी, जगप्रतिबोधी, अमानी, नित्य शुद्धध्यानी, अमायिक, रत्नत्रय साधक सहायी, अलोभी, अक्षोभी, शुद्धभावी, गुणगणालङ्कृत ॥

ऐसे आचार्य भगवानको हमारी त्रिकाल वन्दना है. हमारे सम्यगाराधनसे सहाय शरण त्राण मति गति श्री आचार्य पूज्य है. इस प्रकार स्तवन करके पीछे (३६ लोगस्सका काउस्सग) करे। इस पदके आराधनके मू-

१ जिस दुकानमें सर्व वस्तु मिले उसके समान.

लभागे (प्रथम) दिनरात पौषध चौविहार करना चहिए पीछे यथाशक्ति पारणा, अतिथीसंविभाग करे यथा साधन अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, औषध, पुस्तक, उपकरण, प्रभृति से प्रतिलाभ करावे, आचार्य सेवासे ही सुलभ बोध होता है इस तरहसे चतुर्थपदका आराधन करनेसे अभिमत सिद्धि होती है ॥

॥ आचार्य पदमे पुरुषोत्तमनृप तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन किया ॥

॥ इति चतुर्थ पदाराधन विधि ॥



॥ अथ पञ्चम पदाराधन विधि ॥



नमोथेराणम् ॥ इस पञ्चमपदका पूर्वोक्त साधारण सब विधि स्थिर चित्तसे करे यथा नमोथेराणम् इस पदका दो २००० हजार जप करे फिर गुरु समीप द्वादशावर्त वन्दना पूर्वक वन्दना करके पचखान करके पञ्चम पदका उपदेश सुने ॥ यथा ॥ स्थविरेषुद्धि भेदेषु, लोकलोकोत्तरेषु च। यो भक्तिं कुरुते भावाद् भवद्वय सुखावहा ।१। पित्रादीना लौकिकनां, नमस्कार करोतियः ।।तीर्थयात्रा फलं तस्य, सर्वदापि सुखावहम् ।२। लोकोत्तराश्रये वृद्धा, महाव्रत विभूषिताः । निःसंगवृत्तय स्त्रिधा, पर्यायादित्रिभेदतः ॥ ३ ॥ पर्यायेण विंशताब्दा, वयसा षष्टि वार्षिका ॥ श्रुते न समवायाङ्ग, साध्येति स्थविरास्त्रिधा ॥ ४ ॥

स्थाविराणां त्रिभेदानान्तेषा, मन्नादि वस्तुभिः।

वात्सल्यं भक्ति निस्तुल्यम् ,कुर्वाणाङ्गीगुणोज्वल.५।।वस्त्रं-पात्रं भक्तपानं पविलं, स्थानं ज्ञानं भेषजं पुण्य हेतु ये, यच्छन्ति स्वतमभावैकसारं, ते सर्वाङ्गे सौख्य मासादयन्ति ६।। इत्यादि उपदेशकों सुनकर स्थिर चित्तसे खमामणा पूर्वक नमस्कार करे यथा ।।

१ नमोलौकिकस्थविरदेशकाय लोकोत्तर स्थविरायनम.

२ देशस्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविरायनम.

३ ग्रामस्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविरायनम

४ कुल स्थविर देशकाय लोकोत्तर स्थविरायनम

५ लौकिक कुल स्थविर देशकाय०

६ लौकिक गुरु स्थविर देशकाय०

७ श्री लोकोत्तर श्री संघ स्थविरायनम

८ लोकोत्तर पर्याय स्थविराय नम

९ लोकोत्तर श्रुत स्थविराय नम.

१० लोकोत्तर वय स्थविराय नम.

आदरत्याग परिणति परिणामभी पुष्ट है तीनों वुद्धि पुष्ट होती है, स्थविरोंको उत्पादिकी वुद्धिभी होती है क्योंकि वे जिनमार्गके धुरन्धर हैं श्री गौतमस्वामीजी श्रीकेशीकुमार वयःस्थविरकों वड़ा मानकर आप चलकर उसके स्थानपर गए और श्रीकेशीकुमारने श्रीगौतमको श्रुतस्थविर समझकर वहुमान प्रतिपत्तिकरके और प्रश्नगोष्ठी करके पञ्चविध धर्म अङ्गीकार किया. इस लिये मोक्षार्थीकों परमोपकारी स्थविर मुनिराज है उस स्थविरकों नित्यप्रति त्रिकाल वन्दना हो, वह स्थविर हमारे मुक्ति साधनका सहाय होवे. इस प्रकारसे स्थविरकी स्तुति करके [लोगस्सका १७ काउस्सग करे] चन्दन तैलादिका विलेपन करे और इस पदमेंभी यथाशक्ति दिनरात पौषध करे और इस पदकी भक्तिके विषयमें स्थविर साधुकों शुद्धमान आहार पानी वस्त्र पात्रा कम्बल औषध प्रभृतिदे वहुत विनय करे हाथ जोड़ कर वन्दना करे सुखशाता पूछे साधर्मिककी भक्ति करै, माता

पिता आदि गुरुजनोंकी यथायोग विनय भक्ति करे. स्थविरपदाराधनसे पद्मोत्तर राजा तीर्थंकरपद पाया ॥

॥ इति स्थविर पदाराधन विधि ॥



॥ अथ षष्ठपदाराधनविधि ॥



नमो उवज्झायाणम् ॥ यह छठ्ठापद है स्थिर चित्तसे सर्व साधारण विधि करके इस पदका २० माला जप करे पीछे उपाध्याय पदके गुण स्मरण खमासणा दे वन्दना करे सो प्रकार आगे लिखा जाता है जैसे. ॥

१ आचाराङ्गश्रुतपाठकायनम.
२ श्रीसुयगडाङ्गश्रुत पाठकायनम.
३ श्रीसमवायाङ्गश्रुत पाठकायनम.
४ श्रीठाणाङ्गश्रुत पाठकायनम
५ श्रीभगवतीश्रुत पाठकायनमः

विशेपाधिकार प्राप्त, और अगणित गुणगणका आधार अशेप भाविकजनोंके संशयकों हरनार, सबकों धर्म मार्गमें स्थिर करनार, परमपात्र, इस प्रकारके श्री उपाध्यायजी, वाचक, पाठक, अध्यापक, सिद्धसाधक, श्रुतवृद्ध, कृतकर्मा, शिक्षक, दीक्षक, स्थविर, चिरन्तन, परीक्षक, परीश्रम, वृतमाल साम्यधारी विदित पदार्थ विभाग अप्रमादी सदा निर्विपादी आत्मप्रवादी अध्यानन्दी इत्यादि यथार्थ नामोंसें सुशोभित जगद्वन्धु जगद् त्राता, जगदुपकारी श्री उपाध्यायजीका प्रतिक्षण हमारी वन्दना रहे इत्यादि प्रकारसे हर्पित चित्तसे स्तुति करे इत्यादि इस पदके आराधनमेंभी यथाशक्ति पौपध करे श्रद्धा भक्तिसे उपाध्यायजीका विनय करे वस्त्र पात्र कम्बल औपध प्रभृतिदान करे, मुनि राजजीकों चन्दनादि विलेपन करे, उपाध्यायजीका नवाङ्ग पूजन करे [अथवा] जिसके पास धर्मशास्त्र पढा हो उसकी यथोचित्तभक्ति करे, उपकारका स्मरण करे, सिद्धान्त लिखावे, ज्ञान

नमस्कार करावे. इस प्रकार उपाध्यायपदका आराधन करनेसे सर्वइष्टका लाभ होवे शम् उपाध्याय पदाराधनसे महेन्द्रपाल राजा देवेन्द्र हुआ ॥

॥ इति षष्ठ पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ सप्तम पदाराधन विधि. ॥

नमोलोए सव्व साहूणम्. यह सप्तमपद है. इस पदकी २० माला जप करे पीछे साधुपदके गुणोंको स्मरण करके खमासणा पूर्वक वन्दना करे जैसे ॥

१ पृथ्वीकाय रक्षकेभ्य सर्व साधुभ्यो नमः
२ अपकाय रक्षकेभ्य सर्व साधुभ्यो नमः
३ तेजःकाय रक्षकेभ्यः सर्व०
४ वायुकाय रक्षकेभ्य. सर्व०
५ वनस्पतिकाय रक्षकेभ्य.

६ त्रसकाय रक्षकेभ्यः
७ सर्वतः प्राणातिपात विरतेभ्यः
८ सर्वतः मृषावाद विरतेभ्यः
९ सर्वतोऽदत्तादान विरतेभ्यः
१० सर्वतो ब्रह्म सेवितेभ्यः
११ सर्वत परिग्रह विरतेभ्यः
१२ सर्वतो रात्रि भोजन विरतेभ्यः
१३ लोभादि कषाय निग्रहकेभ्यः
१४ श्रोत्रेन्द्रिय विषय निग्रहकेभ्यः
१५ चक्षुरिन्द्रियविषय निग्रहकेभ्यः
१६ घ्राणेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः
१७ रसनेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः
१८ स्पर्शनेन्द्रिय विषय विरक्तेभ्यः
१९ शीतादि परीषह सहेभ्यः
२० क्षमादि गुण धारकेभ्यः
२१ भावविशुद्धेभ्यः

२२ मनोयोग शुद्धेभ्यः
२३ वचन योग शुद्धेभ्यः
२४ काययोग शुद्धेभ्य.
२५ मरणान्त उपसर्ग सहेभ्य.
२६ अङ्गोपाङ्ग संकोचन संलीनता गुण युक्तेभ्य.
२७ निर्दोप संयम योग युक्तेभ्य. सर्वसाधुभ्योनम.

इस प्रकार वन्दना करके (२७ लोगस्सका काउस्सग) करे पीछे साधु तपस्वीकी स्तुति करे जैसे साधु मुनिराज, पञ्च समिति समता, त्रिगुप्ति गुप्ता, पृथिव्यादि ७ कायका रक्षक, गुणगणो कुलगृह, सदा शुद्धात्म स्वपरिणतिर्मे रमण करनार, अशुद्ध परपरिणति का त्याग करनार, इन्द्रिय गणको दमनकार, सर्व परीसह उपसर्गादिक क्षमा सहित क्षमता, नवा नवा दुष्कर अभिग्रह धारक, अप्रतिवद्ध विहारकारक, रत्नावली, कनकावली, मुक्तावली, मुक्ताकण्ठाभरण गुणरत्न संवत्सर प्रमुख दुष्कर तप करनार, आगमाज्ञाजित प्रमुख

व्यवहारमें विचरता, पञ्चविशुद्ध शुद्धका आचरण करता, दंशदोषको त्याग करता, प्रतिक्षण समता स्थाने स्थित रहता, अस्थिरताका कारण भयादिको नित्य त्यागता, चित्तकों स्थिर करता, प्रतिक्षणमें गुण भएमारमें भ्रमण करता, प्रतिक्षण नूतन नूतन योग साधनमें निरत, प्रति दिन नये नये शास्त्रोंको अध्ययन करता, तृण मणि हार अहिरत्न पापाण आदि सब अनुकूल प्रतिकूल वस्तुको समान गिनता, तीव्र श्रद्धापूर्वक आगमरूप कुठारसे संशयवनको छेदन करनार, सर्वत्र मोहशत्रुको पराजय करनार, एक प्रकारसे श्री जिनाज्ञाका पालक, सर्वतः असंयमको हटावनार, द्विविध धर्मका उपदेशक, रागद्वेष बन्धका दूर करनार, त्रिविध रत्नत्रयीका धारक, दुष्ट मनोयोगादि दण्डत्रय दूरकारक, चतुर्विध देशनाका दाता, क्रोधादि चतुर्विध चतुष्कषायका घातक, पञ्चविध महाव्रतधारी, पञ्च प्रमाद दूरकारी, षड्विध काय प्रतिपालक, अन्तरङ्ग छ शत्रुवोंका नाशक, सप्तविध नय

देशनाका दाता, सप्त महाभयसे त्राता, अष्टविध अष्टाङ्ग योगका साधक, जात्यादि अष्टमद स्थानका जेता, नवविध ब्रह्मगुप्तिका धारक, दवादि नवनिदान परिहारी, दशविध यतिधर्मधारी, जिसने दश दोषोंको शोधन किया है वह, अगणित गुणगणालंकृतगात्र, सप्तविंशति गुणयुक्त, ऐसे महात्मा, महानन्द, शिवार्थी, सन्यासी, भिक्षु, निर्ग्रन्थी, मधुकर वृत्ति, आत्मोपासीक मुक्तमान, महर्षि शान्त, दान्त, अवधूत, शुद्धदेशी शुद्ध-लेशी, अकामी पूर्ण ब्रह्मचारी जागरिकतीर्थी पूर्णकाम अध्यात्मवेदी जिनज्येष्टसुत ऊर्द्धरेता अनुभवी तारक त्रियोगी महाशय भडक तत्वज्ञानी वाचंयम मोहजयी ऋषि अलब्ध अकिञ्चन सर्व सहन प्रतिकर्मी श्रमण सममय परिम्तपुरोग अमृत क्रियाविलासी वचन धर्म-ऋषि शुक्र शुक्लाभिजाति अनुत्तरयोगी मग्न अ-तीन्द्रिय मुण्डितकरण अकर्मा महाबुद्धि महाविचक्षण महासाधक परब्रह्मवेत्ता इत्यादि अनेक गुणरत्न

मुनिराज भवसमुद्र तरणका जहाज, समस्त लोकका मित्र (अढाइज्जेसु इत्यादि) इस प्रकार दो हजार कोमी साधुजी है उनकों हमारी प्रतिदीन त्रिकाल वन्दना है वह घटी दिवस समय क्षण धन्य है जिसमें पूर्वोक्त साधुजीका दर्शन सेवन मेरेकों प्राप्त होवे ऐसे साधु महाराज हमारे मुक्तिसाधनका समय होवे इत्यादि प्रकारसे स्तुति करे। इस पदके भक्तिके विषयमें छठ अट्ठम दशम मासक्षमण प्रमुख दुष्कर तप करनेमें तत्पर साधु तपस्वीका गौरव विवेक सहित करना चहिए, साधुको वस्त्र पात्रादि १४ उपकरणका साहाय्य करे साधुवोंको पुस्तक देवे, पुस्तकका उपकरण देवे, तपस्वी साधुका वैयावच्च करे, तपस्वी साधुका अङ्ग विलेपन करे उपाश्रय वनावे. २ वृद्धरोगी साधुवोंको औषध प्रभृति देवे दीक्षामहोत्सव करे और अठारह शीलाङ्गरथ गाथाका साधुवन्दना पढे ॥ इत्यादि प्रकार सप्तमपद के आराधनसें प्राणी अभिमत फलकों प्राप्त होता है ॥

साधुपदके आराधनसें विरभद्र तीर्थंकर हुआ.

॥ इति सप्तम पदाराधन विधि ॥

॥ अथ अष्टम पदाराधन विधि ॥

॥ नमो नाणस्स ॥ इस अष्टमपदकी २० माला जप करकें ज्ञानपदके गुणोंका स्मरण करके खमासणापूर्वक वन्दना करे जैसेः—

१ श्रोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह सम्यग् मतिज्ञान गुणाय नम.
२ चक्षुरिन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मतिज्ञानाय नम.
३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह
४ रसनेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह
५ स्पर्शनेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह.
६ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह मतिज्ञान गुणाय नम.

७ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह

८ घ्राणेन्द्रियार्थावग्रह.

९ रसनेन्द्रियार्थावग्रह.

१० स्पार्शनेन्द्रियार्थावग्रह,

११ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा मतिज्ञान गुणाय नमः

१२ चक्षुरिन्द्रिय ईहा.

१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा.

१४ रसनेन्द्रिय ईहा.

१५ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा.

१६ श्रौत्रेन्द्रियापाय मतिज्ञान गुणाय नमः

१७ चक्षुरिन्द्रियापाय.

१८ घ्राणेन्द्रियापाय.

१९ रसनेन्द्रियापाय.

२० स्पार्शनेंन्द्रियापाय.

२१ श्रोत्रेन्द्रियधारणा मतिज्ञान गुणाय नमः

२२ चक्षुरिन्द्रियधारणा.

२३ घ्राणेन्द्रियधारणा.

२४ रसनेन्द्रियधारणा.

२५ स्पर्शनेन्द्रियधारणा.

२६ अक्षरश्रृत सम्यग् श्रृत ज्ञान गुणाय नमः

२७ अनक्षर श्रृत.

२८ संज्ञिश्रृत.

२९ असंज्ञिश्रृतः

३० सम्यक् श्रृत.

३१ मिथ्याश्रृत ज्ञान गुणाय नम

३२ सादिश्रृत

३३ अनादिश्रृत

३४ सपर्य वसितश्रृत

३५ अपर्य वसितश्रृत

३६ सपर्य वसित श्रृत ज्ञान गुणाय नमः

३७ अपर्यवसितश्रृत

३८ गमिकश्रृत

समान अपने तरे दूसरोंको तारे सो गुरु कहाने योग्य है नकी हृष्ट पुष्ट मस्त विषय कषायसे अठारह पापस्थान का सेवन करनेवाला पापस्थानका उपदेश करनेवाला पौद्गलिक स्वार्थकी वात वनानेवाला लोहनावके समान अपने डुवते हुए दूसरोंकोभी भवसमुद्रमें डुवानेवाला गुरु है। ऐसों को गुरु मानना भूल है सो सम्यग् ज्ञान विना नहीं मीट शक्ती. धर्मकीभी भूल है क्योंकि दुर्गति में पड़ता प्राणीको धारक वहु कायिक जीवोंका हितकारक जीवदया मूलक वस्तु स्वभावका निरूपक जो होवे वह धर्म है, नकि मद्यपान मांसभक्षण, परस्त्री सेवन, पशु वध (हिंसा) कन्दमूल प्रभृति अनन्तकाय भक्षण संसारतरुका बीजरूप सादी-(कन्यादान) यज्ञ इत्यादि अशुद्ध क्रिया धर्म है इसको धर्म मानना वड़ी भूल है वह भूल सम्यग् ज्ञानके विना नही मिटती ॥ तथा करणीय अकरणीयकी भूल है जिससे अज्ञानी प्राणी आगमोक्त निर्जराके कारण जन्म मरण मिटानेका समर्थ

को अकरणीय कहते है और जो संसार वृद्धिका पुष्ट हेतु आश्रव है उसकों करणीय कहते है यह भूलभी सम्यग् ज्ञानके विना नही मिट सकता तथा गुणकी भूल है जो आत्मक भावकानिरावरण कारक और शेष आवरणी कर्मके निर्जराका कारण हो वह गुण है किन्तु अज्ञानी मनुष्य कर्मबन्धका मुख्य हेतु शस्त्र चलाना वगैरह भूतादि दमन रसग्रन्थका पठन विविध मन्त्रादिका चमत्कार दिखाना, विविध प्रकारका अवसरो चित्त संसारानुबन्धि वचन रचना करना, हाथी, घोडा, व्याघ्र प्रमुखका दमन करना विविध औषधसे रोगादिका दमन करना, अनेक प्रकारसे राजाको प्रसन्न करना, अनेक प्रकारका स्वाङ्ग बनाना, अदृश्य पदार्थको देखाना, इत्यादि कलावालेकोभी गुणी कहते है सो यभी भूल है सम्यग् ज्ञानके विना नही मिटता ॥ तथा हितकारकका भूल है जो अपनेको कुमार्गसे हटावे शुद्ध मार्ग दिखावे; संवरका आदर करावे, वस्तुका स्वरूप बतावे,

ऐसा मुनिराज अथवा शुद्ध श्रद्धावान् साधर्मी धर्मरुची धर्मीष्ठ, धर्मोपदेशक उसकोही हितकारक कहते है लेकिन अज्ञानी लोग जो पञ्च आश्रवका सेवन करावें, संसार वृद्धिका कारण मिलावे, धर्मका कारण पचखान प्रभृति में अन्तराय करे, अपने स्वार्थके लिए रोवै हसें उन्हीको हित कहते है सो भूल विना सम्यग् ज्ञानका नहीं मिटता॥ तथा जगतमें निपुण दक्ष स्याना वह है जो अनादि कालका विरोधि जन्म मरणादिको छेदनकी सामग्री पाकर आश्रवकों त्याग करे, यथाशक्ति विरतिका आदर करे, अनर्थदण्डमें न मिले, शुभाशुभ उदय व्यापक न होवे लेकिन अज्ञ मिथ्यात्वीलोग जो बन्धका हेतु व्यापारादि अठारह पाप सेवन करे शत्रुका दमन करे गृहका निर्वाह करे, अनेक आर्त रौद्रका कारणभूत उत्साह करे, किसीको झूठे फन्देमें लगावे उसको बडा स्याना अकलमन्द कहते हैं सो भूल विना सम्यग् ज्ञानके मिटता नहीं ॥ इस लिए जीव अनन्त गुणोंमें

विशेष गुण ज्ञानका आवरणका कारणको त्याग करे प्रत्यनीकादिको त्याग करे निगोदादि सूक्ष्म भावको पढे सुने, पूर्वका पढा हुआ स्मरण करे भक्ष्य अभक्ष्य पेय अपेयका, जीवा जीवादि नवतत्वका, लोकस्वरूपका, जड़ चेतनका, जन्म मरणका स्वर्ग, मृत्यु, पाताल का इह लोक परलोकका बन्ध निर्जराका साध्य साधनका शुद्धाशुद्ध करणका षड् द्रव्यके उत्पाद व्ययादिका कार्य कारणका स्वपर विलेपनका चतुर्गति भ्रमणका मुक्ति प्राप्तिका चिदानन्द स्वरूपका रूपी अरूपी सुख दुःखका सम्यग् ज्ञान। सम्यग् ज्ञानके विना नहीं होता इससे सबसे बडा ज्ञान सम्यग् ज्ञान है उसके पांच भेद है उन पांचोंमें श्रुतज्ञान मुख्य है, क्योंकि चार ज्ञान मूक और स्वोपकारी है और श्रुतज्ञान वाचाल और स्वपरोपकारी है अतः श्री जिनभाषित द्वादशाङ्गी स्याद्वाद शैलीमय जो आगम है उसको निरन्तर हमारी वन्दना है. आगमोक्त करणी हमारी श्रद्धा सदा

निश्चल रहे इनके सेवनसे हमारा जन्म सफल हो इत्यादि प्रकारसे ज्ञानपदका स्तुति करे. इस पदके भक्ति विषें ज्ञानीकी सेवा विनय वैया वृत्ति करें, ज्ञानी तथा पुस्तकका पूजन करे, ज्ञानका उपकरण रुमाल, पूठा प्रमुख करावे, पढने वालेको साहाय्य करे, अन्न, वस्त्र रहनेकी जगह प्रमुख देवे, आगम श्रवण करे, ज्ञान भण्डार करावे, ज्ञानकी सेवा भली करे, आसातनाकों हटावे, झूठ मुखे न बोले, मिथ्या नही बोले, केवलज्ञान कल्याणकका उत्सव, समवसरणका रचना करावे, बडा उत्सव करे. इस प्रकार अष्टमपदके आराधनसे ज्ञान वृद्धि अभिमत सिद्ध होता है॥ ज्ञानपदाराधनसे जयन्त राजा तीर्थंकर हुआ ॥

॥ इति अष्ठम पदाराधन विधि ॥

॥ अथ नवम पदाराधन विधि ॥

नमो दंसणस्स ॥ यह नवम पद है इस पदका २० माला जप करे पीछे दर्शन पदके गुणोको स्मरण करके वन्दना करे जैसे.

१ जीवा जीवादि तत्वार्थ श्रद्धान रूप सम्यग् दर्शन गुणाय नमः

२ सुविहित मुनिनि बहुमानादर रूप सम्यग् श्रद्धान रूप

३ कुलिङ्गी पासछेदी असहा वन सम्यग् श्रद्धान रूप

४ अन्य तीर्थी सङ्ग वर्जन सम्यग् श्रद्धान रूप.

५ श्री जिनागम सुश्रुषालिङ्ग सम्यग् दर्शन गुणाय नमः

६ उच्छ्रदित विजाहारेखा न्याय धर्मिष्टतालिङ्ग सम्यग्

७ देवगुरु वैयावृति करणोद्यमन लिङ्ग सम्यग्.

८ श्री अर्हद् भक्ति प्रेमादि विनयकरण सम्यग्.

९ श्री सिद्ध विनयकरण सम्यग्.

१० श्री जिन प्रतिमा विनय करण सम्यग्.

११ श्री सिद्धान्त भक्ति प्रेमादि करण सम्यग्.

१२ क्षान्त्यादि धर्मभक्ति प्रेमादि विनयकरण सम्यग्.

१३ श्री साधु भक्ति बहुमानादि विनयकरण सम्यग्.

१४ श्री आचार्य भक्ति प्रेमादि विनय.

१५ श्री उपाध्याय भक्ति प्रेमादि विनय०

१६ श्री प्रवचन भक्ति प्रेमादि०

१७ श्री दर्शन भक्ति प्रेमादि०

१८ श्री जिन जिनागम रुचि एकान्त वादादि असत्य शल्यावधारण मनःशुद्धि सम्यग्.

१९ श्री जिनभक्त्यायन्न सिध्यति तन्नान्यैः सिध्यतीति वचनशुद्धि.

२० श्री जिनेश्वर भाषितमेव सत्यं नान्यदिति निःशङ्कावधारण रूप.

२१ स्वदेह छेदन भेदन व्यथा सहन जिन देव नमन रूप काम शुद्धि सम्यग्.

२२ स्वप्नेपि परदर्शनाभिलाप रूप नि शङ्क सम्यग्.

२३ धर्मज शुभ फले कष्ट भवत्ये वेत्यादि अवधारण रूप

२४ अन्य दर्शन गत मान पूजादि चमत्कार पश्यन्नपि पुसशांऽकरण रूप.

२५ बहुतर कार्योपनयनेपि मिथ्यात्वि संगति वर्जन रूप

२६ वर्तमान समयार्थ ज्ञापक सम्यग् प्रभावक दर्शन गुणाय नम .

२७ अवितथ उपदेशक भव्य जन रञ्जक सम्यक्

२८ शुद्ध स्याद्वाद तर्क युक्तिबलै· परमत खण्डन सम्यग्.

२९ गणितानुयोग विशारद बले शुद्ध निमित्त भापक सम्यग्.

३० इच्छारोध परिणति करी विविध दुर्द्धर तप करण रूप.

३१ पूर्वगत विद्याबलैः श्री संघ पीमा निवारकरूप.

३२ प्रबलकार्योत्पन्ने अञ्जन चूर्णादि योग बलैः शासनोन्नति करण रूप.

३३ प्रबल धर्मकारणोपनये अतुल कवित्व शक्ति बलैः नव नव रस गर्भित काव्येन नृपति मनोरञ्जन रूप.

३४ गुरु वन्दन प्रत्याख्यानादि क्रिया कौशल रूप नूषणै स्तथा अत्यादरनावै विविध क्रिया करण रूप नूषणैश्च नूषित सम्यग्.

३५ अपार संसार समुद्रोत्तारणे तीर्थरूप निपुण गीतार्थ सेवनरूप नूषण नूषित सम्यग्.

३६ श्री गुरुदेव संघादि नक्ति करणरूप नूषण नूषित सम्यग्.

३७ नर देवादि निरनेक प्रकारै श्चालितोपि स्थि-

रता रूप

३८ तीर्थ रथयात्रा संघावारितदान दीनोद्धरण परोपकरणादिभि· सकल जनानुमोद कारापण रूप प्रभावना भूषण

३९ सर्वाणि सुखादीनि औदयिक भावस्य कर्मण फलमिति श्रद्धातो दु खदायकेष्वपि अप्रतिकूल चिन्तनरूप सम्यगुपसम दर्शन.

४० सकल दु ख कारण रूपात् पौद्गलिक भावात् विरतो भूत्वा शिवसुखेच्छालक्षण सम्यग् संवेग दर्शन गुणाय नम

४१ अतुल पुण्यजं देवेन्द्रादि सुखं कारागार सम मितिबोधनं लक्षण सम्यक् निर्वेद दर्शनगुणाय नम

४२ पापोदेयात् रोग शोकादिभि पीडितानां मिथ्यात्वोदयानाम् कुश्रद्धान कुमार्ग गमनादिकं दृष्ट्वातदु ख निवारण चिन्ता लक्षण

सम्यगनुकम्पा दर्शन.

४३ राग द्वेषा ज्ञानत्रयं परिहृत्य जिनेश्वरो योऽभूत् तस्य वाक्य मन्यथान भवतीति दृढ रङ्ग लक्षण सम्यगास्तिक्य दर्शन.

४४ अन्यतीर्थीय चैत्यं मन्यतीर्थीयै गृहीतं वा चैत्यं वन्दना करणरूप सम्यक् यतना दर्शन.

४५ पर तीर्थीयैते गृहीतं वा चैत्यस्य नमना करण रूप.

४६ परतीर्थीकैः सह प्रथमालाप वर्जन रूप०

४७ परतीर्थीकैः सह पुनः पुनः संलाप वर्जन रूप.

४८ परतीर्थीकानां श्रद्धया अशनादि दानाकरण रूप.

४९ पुनः पुनः पूर्वोक्त विधि पूर्वक संभाषण संलापाद्य करण रूप.

५० द्रव्य क्षेत्रकालादि विषमतया उपायान्तरै रात्मत्राणा समर्थ श्चेत्तर्हि अपवाद सेवनां

जिनाज्ञां ज्ञात्वा राज्ञः अन्यस्यवा मिथ्यात्वि
नो नगराधिपस्य अनिवार्याज्ञा करणरूप
आगार दर्शन.

५१ गणैर्निजस्यं स्वधर्म प्रतिकूलकारित करण
रूपागार दर्शन.

५२ बलवता चौरादिभिर्वानिगृह्यमाण सन् आत्म
रक्षणं कृत्वा आत्मशुद्धये प्रायश्चित्तं चरिष्या-
मीति कृत्वा अशुद्ध क्रिया करण रूपागार
दर्शन

५३ मिथ्यादृष्टि धर्मद्वेपि क्षुद्रदेवता प्रभावा
दभिभूत पूर्वोक्त प्रकारं स्मृत्वा अशुद्ध क्रिया
करण रूपागार.

५४ मातृ, पितृ, कलाचार्य, ज्ञाति वृद्धादि नामा-
ज्ञाभङ्गे महान् दोष इति स्मृत्वातदाज्ञा कर-
णरूप गुरु निग्रहागार सेवनरूप

५५ पापोदयेन देशान्तरे भयाद्वारानावेन मि-

थ्यात्वीनां ग्रामे उपायान्तरै शरीर यात्राया अनिर्वाहेन वा अन्नदय नदूण कुमार्ग क्रिया करणरूप वृत्तिकान्तारागार सेवन.

५६ मूले पुष्टे वृक्षोपि सफलः पुष्टोपि नवति मूले नष्टे वृक्षो नश्यति तथाव्रतंरूप वृक्ष मूलं सम्यक्त्व मिति नावना नावित दर्शन गुणाय नमः

५७ नगरस्य गोपुरमिव धर्मनगरस्य सम्यक्त्वं गोपुरं यदि दर्शनशुद्धि रस्तितर्हिद्वारमुद्घाटित मस्ति तदनावे पिहितमस्ति अतः सर्व धर्मस्य द्वारं सम्यक्त्व मिति नावना नावित.

५८ यथा मूले पुष्टे प्रासादः पुष्टो नवति तथा सम्यक्त्व दृढे धर्मप्रासादो दृढो नवतीति प्रवर्तन रूप नावना.

५९ सम्यक्त्वगुण रत्ननिधानं तेन विना आत्मनः सहजागुणाः स्थिरतां न नजन्तीति नावना.

६० यथा कल्पवृक्षलता कामधेनु चिन्तामण्या-
द्यनेकरत्नानामाधार पृथिवी तथा सम्यक्त्वं
सर्व गुणानामाधर इति भावना

६१ दधि दुग्ध घृतादि रसानां भाजन मिव श्रुत
शील समसंवेग रूपाध्यात्म रसभाजनं
सम्यक्त्व मिति भावना

६२ चेतना लक्षणो जीवपदार्थ सन् त्रैकालिक·
इति स्वरूपोपयोगरूप सम्यग् स्थान दर्शन
गुणाय नम·

६३ आत्मा द्रव्यास्तिकाय नयेन नित्योऽनुभव
वासना युक्तोऽमल अखण्ड निजगुण युक्तो
आत्मारामोस्तीति उपयोग रूप.

६४ सर्व जीवाः कुम्भकारवत् कर्मकर्तार इति श्रद्धा
रूप.

६५ आत्मा स्वकृत कर्मणां फलं स्वयं भोक्ता नि-
श्चये नास्तीति श्रद्धा रूप.

६६ मोक्षपदं अचलं मनन्त सुखनिवासं आधि
व्याधि रहित परम सुखमस्ति इति श्रद्धा रुप.

६७ मोक्षपदं सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्रैरेव ल-
भ्यते नान्योपायैरिति श्रद्धा रुप.

इस प्रकार खमासमणा देकर (६७ लोगस्सका काउस्सग) करे पीछे दर्शनपदका स्तुति करे जैसे.

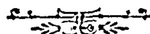
हाथ जोडकर जगतमें सब साधक जीवोंको अपने साध्यके सिद्ध करनेमें श्री दर्शन गुणही उपकारी है। सम्यक् दर्शन विना कोईभी साधन सिद्धिदायक नहीं है। सार्द्ध नव पूर्व पर्यन्त श्रुतपाठी हो लेकिन दर्शन न हो तो वह अज्ञानी है। और सामान्य नवकार आवश्यक मात्र श्रुतधारीको यदि दर्शन प्राप्त हो तो वह ज्ञानी है। दर्शनके बिना साधु श्रावककी सब क्रिया द्रव्यसे कही जाती है। विना दर्शन कितनाभि कष्ट तप करे किन्तु सकाम निर्जरा न होवे। विना दर्शन साध आराधक नहीं कहा जाता। यदि अन्त-

मुहूर्त मात्र दर्शन गुण हो तो अर्द्ध पुद्गलपरावर्तके भीतर भवभ्रमण रहे किन्तु याद न हो । वह दर्शन गुण तीन प्रकारका है. मिथ्यात्व, मोहिनी, कर्मका उपसम करे तो उपसमका प्राप्त होता है । तथा देही जब मिथ्यात्व मोहनीकर्मका कुछ क्षय करे, कुछ उपसम करे तो क्षयोपसमकित प्राप्त होता है । समकित रत्नत्रयीके मध्य सकल धर्मका बीजभूत ज्ञान. चारित्र उपर दल थल फूल प्रमुख है । मोक्षार्थी जीवकों दर्शन समान कोई लाभ नहीं है । जगतमें संसारी जीवकों सब सुलभ है लेकिन अकालमे खीर खांडका भोजन समुद्रमें डूबतेकों नावको प्राप्ति जैसे दुर्लभ है वैसेही समकितकी प्राप्ति दुर्लभ है. अतुल भाग्यके उदयसे समकितका लाभ होता है दर्शनके समान कोई रत्न नहीं है तथा दर्शनके समान कोई बान्धव हितकारक नहीं है दर्शनके समान दूसरा धर्म साधनमें तत्व नहीं है, तीर्थंकर प्रमुख अनेक ऋद्धि पानेका हेतु

एक दर्शनही है. इस हेतुसे देवऋधि नरेन्द्रऋद्धि धनधान्य कोशकोष्ठागार विविध कामभोगविलास प्रमुख पौद्गलिक सुखकी चाहना मैं नही करूं किन्तु एक श्री जिनाज्ञा प्रमाण बोधबीज प्राप्ति जन्म जन्मान्तरमें सुलभ होवे यही हमारी प्रार्थना है । प्रतिक्षण दर्शन गुणधारीको और दर्शन गुणको हमारी वन्दना हो, हमारा दर्शनाराधन सफल हो इत्यादि प्रकारसे स्तवन करे और पारणाके दिन अथवा उसी दिन महापूजा करे करावे, संघ भक्ति स्वामिवात्सल्य करे, दर्शन धारी साधर्मीका पधरावनी करावे, शासन्नोनति, रथयात्रा, पंच कल्याणक महोत्सव, अष्टविधान, प्रासादपर ध्वजारोपण, अमारीपटह घोषण, अन्न वस्त्र दान अजीवकका साहय्य करण इत्यादि विधि यथासम्भव करे तथा निरतिचार सम्यक्त्वका पालन करे और अदर्शनका संसर्ग परित्याग करे सर्व जीवसे मैत्री राखे कषाय प्रबलता मिटावै सब सुख दुःखकों औदयिक

भावकर्मोदय माने, गुणघाती कषाय सर्वथा न राखे। अनुदाण दर्शनशुद्धि विचारें, धर्माचार्यकी विविध भक्ति करे, सबसें गुण ग्रहण करे. दोषको चित्तमें निकाले, अपना अनादि कालका भूल मिटा नहि, ऐसा अपनेंमे दोष विचारे. जिनोंक्त सूक्ष्मभाव सत्रा हैं ऐसी श्रद्धा करे, रुचिवाले जीवकों दर्शन प्राप्ति करावें पढने वालेकों पढनेमें स्थिर करावे. इत्यादि प्रकारसे नवपदका आराधन करे. दर्शन पदाराधनसे हरिविक्रम जीन हुआ.

॥ इति नवम पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ दशम पदाराधन विधि ॥

नमो विनय संपन्नाणं ॥ इस दशम पदका २० माला प्रथम जप करे पीछे विनयपदके गुणोंका याद करके ५२ नमस्कार करे सो आगे लिखा जाता है.

१ तीर्थङ्कर अनासातनारूप विनयगुण संपन्नाय नमः
२ तीर्थंकर भक्ति प्रवणरूप.
३ तीर्थंकर बहुमान करणरूप.
४ तीर्थंकर श्रुत रूप.
५ सिद्ध आसातना रूप.
६ सिद्ध भक्ति निपुण रूप.
७ सिद्ध बहुमान करण रूप.
८ सिद्ध स्तुति करण तत्पर रूप.
९ सुविहित चन्दादि कूलानाशातना रूप.
१० सुविहित चन्दादि कूल बहु भक्ति प्रवण रूप
११ सुविहित कूल बहु मान करण नपुण रूप.

१२ सुविहित कुल संस्तुति करण तत्पर रूप.
१३ कोटिकादि सुविहित गण भक्ति बहुमान रूप.
१४ कोटिकादि सुविहित गण भक्ति करण नि-
पुण रूप
१५ सुविहित कोटिकादि गण संस्तुति करण रूप.
१६ सुविहित गणानाशातना रूप.
१७ श्री संघ अनाशातना रूप.
१८ श्री संघ भक्ति करण रूप.
१९ श्री संघ बहुमान करण रूप.
२० श्री संघ स्तुति करण रूप.
२१ श्री आगमोक्त क्रिया अनाशातना रूप.
२२ शुद्धागम क्रिया भक्ति करण रूप.
२३ आगमोक्त शुद्ध क्रिया बहुमान करण रूप.
२४ शुद्धागमोक्त क्रिया स्तुति करण रूप.
२५ श्री जिनोक्त धर्म अनासातना रूप.
२६ श्री जिनोक्त धर्म भक्ति करण निपुणरूप.

फल आश्रव, आश्रवका संवर, संवरका फल तप होता है. और तपका फल निर्जरा, उसका फल क्रियानिवृत्ति, उसका फल अयोगित्व, अयोगीपनेका फल भव संतति क्षय, भवसंततिक्षयका फल मुक्ति है. इस लिए सर्व कल्याणका भाजन विनय है, जैसे वृक्षका मूल दृढ स-रस होनेसे स्कन्ध, शाखा, प्रशाखा, दल, पुष्प, फल प्रमुख सब सुलभ होता है; वैसेही विनय गुणवाला पुरुष प्राणी श्रुत शीलका तत्वको प्राप्त होता है. पापका नाश करता है, और सिद्धिको प्राप्त होता है। जैसे सुवर्णमें नरमी बहुत है, नमानेसे नम जाता है, कालिमानहीं है, अग्निमें तपानेसे अधिक उज्वल होता है, इससे सातो धातुमें सुवर्ण अधिक श्रेष्ट कहा जाता है, और पवित्र माना जाता है, वैसेही विनय सब गुणोंमें श्रेष्ठ है. विनयगुणसंपन्न प्राणी मान, जय, मृदुताको प्राप्त होता है, मिथ्यात्वका कठिन हटको परित्याग करता है, कृष्णलेश्यारूप कालिमानहीं रहती तो और सबसे

अधिक माननीय होता है, इससे मोक्षार्थी प्राणीको विनय शैली पाये विना किसी गुणकी प्राप्ति नही होती विनय गुण लौकिक लोकोत्तर भेदसे दो प्रकारका है, लौकिक विनयसे इह लोकमें सब सानुकूल रहता है, और यश कीर्ति होती है, सज्जन कहलाता है लोकोत्तर विनयसे प्राणी इह लोक परलोकमें परम सुख का भाजन होता है, और इह लोकमें विराधक भावमे साधकताको प्राप्त होता है, श्री संघमें प्रसंशनीय आचार्य्य उपाध्यायादि पदवीकों पाता है, श्री संघमें मुख्य होता है, चतुर्विध संघका मान्य पूज्य होताहै. परभवमें सकल कर्मका नाश करता है, सादि अनन्त भागें कल्याणका अनुभव करता है, इस लिए अरिहन्तादि १३ पदका विनय करना हमारा परम साधन है, हमारा मनोरथ वृक्षका अवन्ध्यबीज है, मेरेको जन्मजन्ममें अरिहन्तपदका विनय प्राप्त हो यही हमारी आन्तरिक प्रार्थना है. इत्यादि प्रकारसे स्तुति करके विनयपदके

उद्यापनामें २३ पदकी अनाशातना सम्यक्त्व है. अतः यथाशक्ति अरिहन्तकी पूजा करे, मन्दिर बनवावे मन्दिरका कचरा निकाले, वासन मांजे, विनय पूर्वक उत्तम द्रव्यसे प्रतिमाजीको साफ करे, पुस्तकें लिखावे, पहलेके लिखे पुस्तकोंका संरक्षण करे करावे, पढे पढावे, आवश्यकादि क्रिया विधि बहुमानसे करे, क्रियाका फल औरोंसे कहे, दूसरोंको क्रिया सिखलावे, स्थविर साधुको विनयसे औषध प्रमुखका निमन्त्रण करे, प्रसंशा करे, बहुमान विनयसे संघभक्ति सामीवात्सल करे. इस प्रकार दशम पदका आराधन करे॥ विनयपद आराधनसें धन्नो मोक्ष गया.

॥ इति दशम पदाराधन विधि ॥



॥ अथ एकादश पदाराधन विधि ॥

॥नमो चारित्तस्स॥ इस एग्यारहवां पदका २० माला जप करे, पीछे चारित्तके गुणोंका याद करके खमासणा-पूर्वक वन्दना करे जैसेः—

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमणव्रत धराय नम.
२ सर्वतः मृषावाद विरमणव्रत धराय नम.
३ सर्वत. अदत्तादान विरमणव्रत०
४ सर्वत मैथुन विरमणव्रत०
५ सर्वत परिग्रह विरमणव्रत०
६ सम्यक् क्षमा गुणधराय नमः
७ सम्यग् मार्दव गुण०
८ सम्यगार्जव गुण०
९ सम्यग् मुक्ति गुण०
१० सम्यग् तपो गुण०
११ सम्यक् संयम गुण०

१२ सम्यग् बोध दर्शन गुण०

१३ सम्यग् सत्य गुण०

१४ सम्यग् सौम्य गुण०

१५ सम्यग् किंचन गुण०

१६ सम्यग् ब्रह्मचर्य गुण०

१७ विगत प्राणातिपाताश्रवाय गुणवते नमः

१८ विगत मृषावादाश्रवाय गुणवते०

१९ विगत अदत्तादानाश्रवाय०

२० विगत मैथुनाश्रवाय०

२१ विगत परिग्रहाश्रवाय०

२२ श्रोत्रेन्द्रिय विषय विरक्ताय चारित्राय गुणवते नमः

२३ घ्राणेन्द्रिय विषय विरक्ताय०

२४ चक्षुरिन्द्रिय विषय०

२५ रसनेन्द्रिय विषय०

२६ त्वगिन्द्रिय विषय०

२७ विजित क्रोधाय चारित्र गुणव्रते नमः
२८ विजित मान दोषाय॰
२९ विजित माया दोषाय॰
३० विजित लोभ दोषाय॰
३१ मनोदण्ड रहिताय॰
३२ वचनदण्ड रहिताय॰
३३ कायदण्ड रहिताय॰
३४ वसति शुद्ध ब्रह्मव्रतयुक्ताय॰
३५ स्त्रीभि सह वार्ता वर्जन ब्रह्मव्रत युक्ताय॰
३६ स्त्री सेवितासन वर्जन ब्रह्मव्रत॰
३७ स्त्री रूपानवलोकन ब्रह्मव्रत॰
३८ कुड्यन्तरित स्त्रीपुरुष मैथुन वसतिशयन वर्जन ब्रह्मव्रत॰
३९ पूर्वक्रीडित भोगस्मरण वर्जन ब्रह्म॰
४० अनिमन्त्रिताहारवर्जन ब्रह्म॰
४१ सरसाहार वर्जन ब्रह्म॰

४२ विभूषणादिना शरीरशोभा वर्जन ब्रह्म०

४३ आचार्य वैयावृत्तिकरण सम्यक् चारित्रगुणायनमः

४४ उपाध्याय वैयावृत्तिकरण०

४५ तपस्वि वैयावृत्तिकरण०

४६ शिष्य वैयावृत्तिकरण०

४७ ग्लान वैयावृत्तिकरण०

४८ साधु वैयावृत्तिकरण०

४९ साध्वी वैयावृत्तिकरण०

५० संघ वैयावृत्तिकरण०

५१ कूल वैयावृत्तिकरण०

५२ गण वैयावृत्तिकरण०

५३ सम्यक् चारित्र ज्ञान गुणायनमः

५४ सम्यक् चारित्र गुणाय०

५५ सम्यग् दर्शन चारित्र गुणाय०

५६ अनसन तप चारित्र गु०

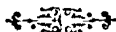
५७ सम्यगूनोदर तप चारित्र०
५८ सम्यग्वृत्ति संक्षेप तपश्चारित्र०
५९ सम्यग् रसत्याग तपश्चारित्र०
६० सम्यग् कायक्लेश तप०
६१ सम्यक् संलीनता तप०
६२ प्रायश्चित्ताभ्यन्तर तप०
६३ विनयाभ्यन्तर तप०
६४ वैयावृत्ति तप०
६५ सद्भाव तप०
६६ ध्यानतप चारित्रकायोत्सर्गतप चारित्र०
६७ क्रोधजय चारित्र गुणायनमः
६८ मानजय०
६९ मायाजय०
७० लोभजय०

इस प्रकार वन्दना करके (लोगस्सका ७० काउस्सग) करे. पीछे चारित्रपदकी स्तुति करे जैसे

सच्चिदान्दपदका मुख्य कारण अनन्त चारित्र गुण है. चक्रवर्ति प्रमुख पदवी चारित्रका सहज फल है चारित्रके पालनेसे आमोसही विप्पोसही प्रमुख अनेक लब्धि उत्पन्न होती है चारित्र ज्ञानानन्द स्वरूप परम अनुभव स्वरूप है. वर्ष पर्यन्त शुद्ध चारित्री अनुत्तर देवताके सुखको अतिक्रमण करता है. चारित्रीको राजभय चोरभय नहीं होता. चारित्री सर्वका हितकारी जगवन्द्य होताहै, परलोकमें स्वर्ग अथवा मुक्तिको पाताहै. चक्रवर्ति प्रभृतिभी चारित्रके रहस्यको समझकर ७ खण्डके प्रभुताको तृणवत् परित्याग करके बड़े उत्साहसे चारित्र अङ्गीकार किए, जिससे देवेन्द्र नरेन्द्रकोभी पूजनीय हुए, एकदिनभी शुद्ध चारित्र पालेतो मुक्ति हो, कदाचित् मुक्ति न होतो भी वैमानिक देवतो अवश्य हो. आठ कर्मका जो अनादि परम्परा संचित है उसको नाश करता है, ऐसा चारित्र शब्द यथार्थ है, विना चारित्र कोई मुक्ति नहीं पाता. ऐसा सर्व श्रेष्ठ चारित्र

धर्म जिसदिन हमको प्राप्त हो वह दिन समय धन्य है, जिन्होंने चारित्र धर्म पाया है वही हमारा पूज्य है. ऐसे चारित्र गुणको नित्य हमारी वन्दना है ॥ इस प्रकारसे स्तुति करे पारणाके दिन मुनिको प्रतिलाभ करावे, यथाशक्ति श्रावकोंको भोजन करावे, अमारीका पटह वजावे चारित्रका उपकरण ओघा. मुंहपत्ती, पात्रा, कांवल, आसन प्रमुख साधु योग्य, चरवला मुंहपत्ती प्रभृति श्रावक योग्य वनवावे, दीक्षाका महोत्सव करे, दीक्षा कल्याणकका महोत्सव करे, छ कायका (जयणा) करे, औरोंकोभी चारित्र गुणका प्रेमी बनावे. चारित्र पदाराधनसें वरुणदेव जीनवर हुए ॥

॥ इति एकादश पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ द्वादश पदाराधन विधि ॥



नमो बंभय धारीणाम् ॥ इस बारहवा पदका २० माला जप करे, पीछे ब्रह्मचर्यके गुण स्मरणपूर्वक वन्दना करे ॥ जैसे.—

१ मनसा औदारिक विषय अकरणरूप ब्रह्मचर्य धरायनमः ॥

२ मनसा औदारिक विषय अकारणरूप.

३ मनसा औदारिक विषय अननुमोदनरूप.

४ वचसा औदारिक विषय अकरणरूप.

५ वचसा औदारिक विषय अकारणरूप.

६ वचसा औदारिक विषय अननुमोदन रूप.

७ कायेन औदारिक विषय अकरणरूप.

८ कायेन औदारिक विषय अकारणरूप.

९ कायेन औदारिक विषय अननुमोदनरूप.

१० मनसा वैक्रिय अकरण रूप
११ मनसा वैक्रिय विषय अकारण रूप
१२ मनसा वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप
१३ वचसा वैक्रिय विषय अकरण रूप
१४ वचसा वैक्रिय विषय अकारण रूप
१५ वचसा वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप.
१६ कायेन वैक्रिय विषय अकरण रूप
१७ कायेन वैक्रिय विषय अकारण रूप
१८ कायेन वैक्रिय विषय अननुमोदन रूप ब्रह्म-
चर्य गुणधराय नमः ॥

इस प्रकार वन्दना करके (लोगस्स १० का काउस्सग) करे. पीछे ब्रह्मचर्यपदकी स्तुति करे॥ जैसे सब व्रतोंमे ब्रह्मचर्य बडा है—

ब्रह्मचर्यके रक्षाका नववाड प्ररूपण किया है और व्रतोंके भङ्गसे एकही व्रत भङ्ग होता हे, और ब्रह्मचर्यके भङ्गसे पांचो व्रतका भङ्ग होता है, जिसने चतुर्थ व्रत

पालन किया उन्होने पांचो व्रत पालन किया. समुद्रके समान ब्रह्मव्रत है, और व्रत छोटी २ नदियोंके समान है, यदि ब्रह्मचर्यमें दृढ होवे तो देवता. दानव, यक्ष, राक्षस प्रमुख सब कोइ नमस्कार करें। देवतामें सब शक्ति रहने परभी ब्रह्मचर्य पालनकी शक्ति नहीं है. ब्रह्मचारी आप उज्वल रखता है. ब्रह्मचारी यदी मन्त्र विद्या साधन करे तो शीघ्र सिद्धि होवे. नारदके समान कलहकारी केवल ब्रह्मव्रतसेही तरता है। आगममेभी ब्रह्मव्रतका ३२ बडी उपमा दी है,-

जैसे पर्वतोंमे मेरु है, धेनुओमें कामधेनु है, वृक्षोंमें कल्पवृक्ष है रत्नोंमें चिन्तामणि है, समुद्रोंमें क्षीरसागर है, लताओंमें चित्रावल्ली है, वश्यार्थमें मोहनवेलि है, धातुओमें, सुवर्ण है, हाथिओमें एरावण है, देवोमें वीतराग है, सुरगणोंमें इन्द्र है॥ वैसे व्रतोंमे ब्रह्मव्रत बडा है, एसी उपमा जिनराजने स्वयं दी है॥

चारित्रका मूल ब्रह्मचर्य है, समकित वृद्धिका का-

रण ब्रह्मचर्य है, और व्रत उत्सर्ग अपवाद रूप है, और ब्रह्मव्रत केवल उत्सर्गही है, इस कारणसें दुष्करकारी शुद्ध ब्रह्मचारीकों प्रतिक्षण हमारी वन्दना रहे, और उक्तस्वरूप ब्रह्मव्रतको हमभी पालन करे, इस प्रकार स्तवन भावना करे। और पारणाके दिन ब्रह्मचारीकी, चतुर्विध संघकी भक्ति करे, स्वामीवत्सल पधरावनी यथाशक्ति करे, इस पदके ओली पर्यन्त ब्रह्मचर्य नव वाड विशुद्ध पालन करे, अठारह हजार शीलाङ्गरथकी गाथाका शिक्षा करे, औरोंकाभी शील पालन करावे ऐसे करनेसे संसार समुद्रको प्राणी अनायास तरे ॥ ब्रह्मचर्य पदके आराधनसें चन्द्रवर्मा जीन हुआ ॥

॥ इति द्वादश पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ त्रयोदश पदाराधन विधि. ॥

नमो किरीयाणम् ॥ इस तेरहवां पदका २० माला जप करके पदका गुण स्मरण पूर्वक वन्दना करे ॥ जैसे,–

१ अशुद्ध कायिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुण-
वते नमः ॥

२ अधिकरणिका क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुण-
वते नमः

३ परितापिका क्रिया प्रवर्तन रहिताय०

४ प्राणान्तिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय०

५ आरम्भिका क्रिया प्रवर्तन रहिताय०

६ परिग्रह क्रिया प्रवर्तन रहिताय०

७ माया प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय०

८ मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय०

९ अपचरकाणी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१० द्दष्टिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
११ स्पर्शन क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१२ प्रातित्यकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१३ सामन्तोपनिपातनिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१४ नैशस्त्रिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१५ स्वहस्तिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१६ आणवणी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१७ विदारणिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१८ अनाभोगप्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
१९ आणवकप्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
२० आज्ञापन प्रत्ययिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
२१ प्रयोग क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
२२ समुदाण क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰
२३ प्रेम क्रिया प्रवर्तन रहिताय॰

२४ द्वेष क्रिया प्रवर्तन रहिताय०

२५ इरियावहि क्रिया प्रवर्तन रहिताय गुणवते नमः

इस पकार वन्दना करके (२५ लोगस्सका काउस्सग) करे. पीछे क्रियापदकी स्तुति करे॥ जैसे जगतमें सम्यक् क्रिया निर्जराका हेतु है. श्री जिनेन्द्रशासनकी स्थिति क्रियारूपसे रही है, सकल शुद्ध व्यवहार क्रियामय है, स्याद्वादमार्गकी क्रिया मोक्षका मुख्य हेतु है, सम्यग् ज्ञान क्रियामय है, सम्यग् ज्ञान दर्शनसे शुद्ध क्रिया शोभती है, असंख्यात जो मुक्ति के कारण कहे हैं वे सब क्रियाके भेदसे है, अनेक गतिके तपभी क्रिया भेदसे है. सम्यगक्रिया कहे तो अक्रिय पदकों पावें. सम्यग् ज्ञानी शस्त्र सुभट रूप है. जैसे बडा बलवानभी सुभट विना शस्त्रका शत्रुको नही जीत सक्ता, वैसे सम्यग् क्रियाके विना प्राणी कर्मका क्षय नही कर सक्ता. (ज्ञान क्रिया-

न्यां मोक्ष) इस आगमसे क्रियारुचि जीव अल्पसंसारी कहा है मिथ्यादृष्टिजी केवल सम्यग् क्रिया करे तो नवम ग्रैवेयक तक जाता है. शुद्ध श्रद्धावाले धर्म प्रिय जो क्रियाके विषे बहुत आदर वाले है. धर्मको इष्ट समझकर क्रिया करते है सो भावधर्म कहते है. प्रभुके आज्ञारूप दान, शील. तप, भावना रूप मुक्तिका मुख्य साधन जिस समय सम्यग् क्रिया की जाय वह हमारा संबल रूप है धर्म प्राप्तिका अवंध्य बीज है, इससे सम्यग् ज्ञान क्रिया वालेको प्रतिक्षण हमारी वन्दना है ॥

इत्यादि प्रकारसे स्तुति करके स्थिर चित्तसे यदि उस दिन पोषध बने तो बहुत उत्तम, नही तो पांच सात सामायिक करे, सावद्य क्रिया न करे, न करावे. मन, वचन, कायको गुप्त रखे, पारणमें मुनिओंको दान

दे, उपधान प्रमुख क्रियाका उत्सव करे, आवश्यकादि क्रियाका आदर करे करावे, आदर किएको साहाय्य करे, घरमें शुभ क्रिया करे ॥ ऐसे करनेसे मनुष्यको अभिमत फल प्राप्त हो ॥ क्रिया पदके आराधनसे हरिवाहन तीर्थंकर हुआ. ॥

॥ इति त्रयोदश पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ चतुर्दश पदाराधन विधि. ॥

॥ नमोतवस्स ॥ इस चौदहवें पदका २० माला जप करके तपके भेदोंको स्मरण पूर्वक वन्दना करे ॥ जैसेः—

१ अनसनाविध तपोयुक्ताय नमः
२ ऊनोदर तपोयुक्ताय नम.
३ वृत्तिसंक्षेप तपा युक्ताय नम.
४ रसत्यागरूप तपो०
५ कायक्लेश तपो०
६ संलीनता तपो०
७ प्रायश्चित्त तपो०
८ विनयरूप तपो०
९ वैयावृत्तिरूप तपो०
१० सद्भावकरणरूप तपो०
११ ध्यानरूप०

१२ कायोत्सर्गरूप तपो युक्ताय नमः

इत्यादि प्रकारसे वन्दना करके (लोगस्सका १२ काउस्सग) करे. पीछे तपपदकी स्तुति करे. जैसे, सम्यग् तप, कठिन कर्म रूप जंजीरे तोडनेके लिए वज्रका मुद्गर है, अति कठिन निकाचित् कर्म फल दे कर छूटता है, अथवा सम्यग् तपसे छूटता है. अनन्त बलवान् शासनाधीश सकल विज्ञान भास्कर सुरासुर सेवित चरणारविन्द, निश्चय चरम शरीरी परमेश्वरजी कठिनतर तप करके कर्मको छेदन किए. ॥

तपसे विचित्र लब्धि, अष्टमहा सिद्धि प्राप्त होती है, चक्रवर्ती प्रमुख पदवी तपका फल है, तपस्वीका वचन निःफल नहीं होता, चारित्री तपोधन कहे जाते है. दृढ प्रहारी, चिलाती पुत्र, काल कुमारादि १० महा पाप कर्ता तपके बलसे थोडे कालमें केवलज्ञान पा कर संसारसे तर गए. ईच्छानिरोध कर करके क्षमायुक्त तप करे तो साधकको कोई पदवी दुष्कर नहीं है । त-

पस्वी मुनि शासनका दीपक समान है, सर्व दर्शनिकको वन्दनीय होता है. तपस्वीसे मिथ्यात्वीजी मरते रहे. आसातना नही कर सके, शासनका उछेद करनेको नमुचि नामका दुष्ट मिथ्यात्वी उद्धत था, उसको विष्णुकुमारने शिक्षा देकर शासनकी स्थिर शोभा किया. अष्टम तप प्रभावसे देवता आप खमा रहे जो कहे सो कार्य करता है नागकेतुको अष्टम तपके प्रभावसे धरणेन्द्र आकर स्वयं रक्षा किया, तपस्वी मुनि शासनमें बमे महान् है, उन्हीसे गछकी शोभा है, इस कारण मुक्तिका परम अवन्ध्य कारण परम मङ्गलरूप तपपदको हमारी सदा वन्दना है ॥ इस प्रकारसे तप पदकी स्तुति करके उसी दिन अपना काय सहनरूप कायक्लेशादि तपका आदर करे. पारणामें आंबिल आदि तपका अभिग्रह धारण करे, तपके दिन क्लेश कषाय न करे, उंली पर्यन्त मन्द कषायमे वर्ते, कषायका त्यागही भाव तप है. इससे क्षमासे सन

धर्म क्रिया सफल होता है॥ १२ मोदकसे मुनिकों प्रतिलाभ करावे, पीछे तपस्वी श्रावक आदिका भक्ति करे, शीतातपसे तपस्वीका साहाय्य करे, यथायोग्य कनकावली, रत्नावली, मुक्तावली, सिंहक्रीडन प्रमुख तप करे. इस प्रकार तप पदका आराधन करे॥ तपपदके आराधनसें कनककेतु तीर्थंकर हुआ.

॥ इति चतुर्दश पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ पञ्चदश पदाराधन विधि ॥

॥ नमो गोयमस्स ॥ इस पन्द्रहवें पदका २० माला जप करके पीछे श्री गौतम पदका गणधर भगवान्के गुणोंका स्मरण करके वन्दना करे. जैसे.–

१ श्री गौतम गणधराय नम.
२ श्री अग्निभूति गणधराय नमः
३ श्री वायुभूति0
४ श्री व्यक्तस्वामि0
५ श्री सुधर्मा स्वामि0
६ श्री मण्डितस्वामि०
७ श्री मौर्यपुत्रस्वामि०
८ श्री अकम्पितस्वामि०
९ श्री अचलभ्राता०
१0 श्री मेतार्यस्वामि०

११ श्री प्रन्नासस्वामि०

१२ चतुर्विंशति तीर्थङ्कराणांद्विपञ्चाशदधिक च-तुर्दशशत १४५२ गणधरेन्यो नमः ॥

इत्यादि प्रकारसे वन्दना करनेके बाद (लोगस्स १२ का काउस्सग) करे, पीछे गोतम पदकी स्तुति करे तद् यथा ॥ स्वनिबद्ध गणधर नामकर्म विशेष प्राणी तीर्थङ्करके प्रथम देशनामें प्रनुके मुखसे उपदेश श्र-वण करके परम वैराग्यसे उल्लसित चित्त होकर श्री जिनेश्वरजीके हाथसे दीक्षा ग्रहण किया, और परमे-श्वरको तीनवार प्रदक्षिणा करके (खमासणा) देकर कहे कि हे नगवन् हे इह्राकारिन् वाचना प्रसाद किजिए. एसा परमेश्वरसे वाचना मांगे और उसी समय इन्द्र वज्रमणिके स्थालीमें चन्दन आदि ५२ सुगन्धि द्रव्य चूर्ण नरकर निकट खमा रहे, तव परमेश्वर सिंहासनसे कुछ उठकर स्थालीमेंसे चूर्ण उठाकर मुख्य गणधरके शिर पर माला, (उपन्नेवा) उच्चारण करता हुआ, और

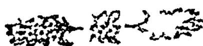
गणधरोंके शिरपरजी वासक्षेप डाला, तब गणधरोंको लब्धि प्रगट हुई, सब गणधरोंकी दृष्टिमें जीतने जीव पदार्थका उत्पत्ति है सो सब देखनेमे आती है तब गणधर विचार करता है की ए अनन्त उत्पाद कहां प्रवेश करेगा, तब फिर खमासमणा पूर्वक प्रदक्षिणा करके वाचना मांगता है तो फिर प्रभुजी पूर्ववत् (विघनेवा) इस पदको उच्चारण करता हुआ वासक्षेप डालता है तब गणधरोंको विनाशको प्राप्त होती हुई चीजें देखने में आती है, जो उत्पन्न होता है सोवि नष्ट होता है इस प्रकार प्रतिसमय विनाश देखकर विचारता है की जब ऐसे अनन्त विनाश हो रहा है तो क्या रहेगा फिर पूर्वोक्त प्रकारसे वाचन मागता है, और प्रभुजी पूर्ववत् (ध्रुवेवा) ऐसा उच्चारण करके वासक्षेप गण-धरोंके शिरपर डालते है. तो गणधरोंके दृष्टिमें ये पदार्थ व्यापने है, और एक नवीन पर्याय उत्पन्न होता है और पूर्व पर्यायका नाश होता है, इस प्रकार वस्तुका उत्पा-

दक, व्यय, ध्रौव्यका ज्ञान रूप त्रिपदीको पाकर गण-धर द्वादशाङ्गीकी रचना करता है. उसमें ५ अधिकार है सो सब सूत्रसे रचना करता है. बारहवां अङ्ग दृष्टि वाद है सो संपूर्ण गणधर लब्धिवन्तको होता है, चौदह पूर्व जिसका एक देश है एसे गणधर भगवान् चार ज्ञान अनेक लब्धि संपन्न तीर्थङ्करकी उपमाको पाता है, शासन व्यवहारकी स्थापना श्री गणधर कृत होती है.

इससे चौबीस तीर्थङ्करोंके १४५२ गणधरोंको ह-मारी नित्य त्रिकाल वन्दना है ॥ इस प्रकार गणधर की स्तुति करके पीछे पात्र, महापात्र, मध्यम पात्र, जघन्यपात्रका विचार करे । उस रत्न पात्र महामुनि है, सुवर्ण पात्र देशविरति समकिती है, ताम्र पात्र मार्गानुसारी है,लोहपात्र अज्ञान कष्ट करनेवाले तपस्वी हैं, और शेष अज्ञानी मिथ्यादृष्टि अथवा अपात्र मि-थ्यात्वी पात्र कहे जाते है. मिथ्यादृष्टिकों हजार लाख

देनेका जो फल होता है सो एक देशविरति श्रावक के भोजन करानेसें होता है, और हजार देश विरतिके देनेसे जो फल होता है सो एक महाव्रती साधुको दान देनेसे फल होता है हजार साधुको दानका फल विचारकर गौतम छठके पारणे बड़े भावसे साधुको खीर खांडका भोजन दे. आचार्यकी नवाङ्ग पूजन करे औषध वस्त्रादि देवे, गणधरकी मूर्ति बनवावे तथा जिनेश्वरके आगे २४ नारियल रखे, १४५७ सुपारी आदि फल रखे. इस तरहसे पन्द्रहवें पदका आराधन करे॥ गौतम पदाराधनसें हरिवाहन तीर्थंकर हुए ॥

॥ इति पन्द्रह पदाराधन विधि ॥



॥ अथ षोडश पदाराधन विधि ॥



॥ नमो जिणाणं ॥ इस सोलहवें पदका २० माला जप करे, और २० विद्यमान जिनको वन्दना करे ॥ जैसे.—

१ श्री सीमन्धर जिनेश्वरायनमः
२ श्री युगन्धर जिनेश्वरायनमः
३ श्री वाहु जिनेश्वरायनमः
४ श्री सुवाहु जिनेश्वरायनमः
५ श्री सुजात जिनेश्वरायनमः
६ श्री स्वयंप्रभु जिनेश्वरायनमः
७ श्री ऋषभानन जि०
८ श्री अनन्तवीर्य जि०
९ श्री सूरप्रभु जि०
१० श्री विशाल जि०

११ श्री वज्रधर जि०
१२ श्री चन्द्रानन जि०
१३ श्री चन्द्रबाहु जि०
१४ श्री भुजङ्गस्वामि जि०
१५ श्री ईश्वर जि०
१६ श्री नेमिप्रभु जि०
१७ श्री वीरसेन जि०
१८ श्री महाभद्र जि०
१९ श्री देवसेन जि०
२० श्री अजितवीर्य जिनेश्वरायनम.

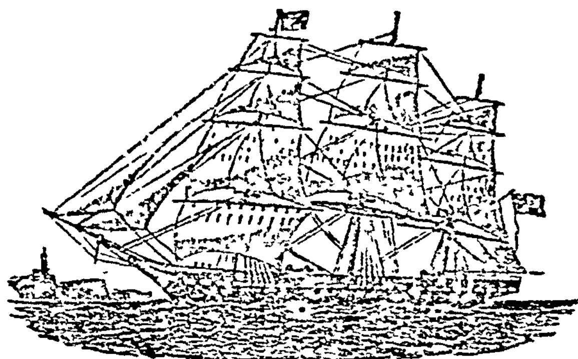
इस प्रकार वीस तीर्थङ्करोंसें वन्दना करके पीछे (२० लोगस्सका काउस्सग) करे. पीछे स्तुति करे जैसे, तीर्थंकर, केवली, अवधीज्ञानी, मन पर्यवज्ञानी, चतुर्दश पूर्व, दशपूर्व, उत्कृष्ट लब्धीवाले चारित्रीकों जिन कहते है, जिनका वैयावृत्ति करे तथा जिनके परिवार जो आचार्य, उपाध्याय, साधु, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी,

चैत्य, श्रमणसंघ ए सब जिनाज्ञाका आराधक है, बडे गुणी हैं, इससे जिन पदमें इन्होंका वैयावृत्ति करना हमारे मनुष्य भवका लाभ है. जो जिनको आराधन करे सो जिन होवे, वह धन्य है, कृत्य पुण्य है. जिन्होने उक्त दश पदका वैयावृत्ति किया वही आराधक है, अन्त संसारी है. श्री जिनजीके सेवन वैयावृत्तिका अजब तमासा है. जैसे अन्य हरिहरादि देव सातिशय भक्तिसे प्रसन्न होते है और आसातना बेअदबीसे अप्रसन्न होते है। वैसे श्री जिनदेव रीझते खीझते नहीं. जैसे अन्यदेव अपराधीक जलाबला कर भस्म कर देते है वैसे जिनदेव कोप कभी नहीं करते और जिनके सेवा करनेवाले इप्सित फलकों पाते है, जिनके समान होते है और जिनके आसातना करनेवाले दुरन्त दुःख भागी होते है. एसा निःकलंक निर्विकार निष्काम् निरञ्जन सर्वगुण संपूर्ण जिनदेव अनन्त भव भ्रमण करके बडे भाग्यसे मिले और पहचाने गए, अब कुछभी

न्यून नहीं रहा. ऐसे स्वामी कैसे मीत सक्ता है जो सेवकसे दिल प्रसन्नसे प्रसन्न हो. ऐसा स्वामीकी सेवा क्यों कर छोमा जाय, ऐसा साधन पाकर साधन न करे वही बमा मूर्ख है, बडा नाग्यहीन है, इस लिए हमारी गति मति स्थिति आधार प्राण शरण साध्य साधन सब श्री जिनका चरणारविन्द है, जिनको प्रतिक्षण हमारी वन्दना हो॥ इस प्रकार स्तुति करके पारणाके दिन बत्तीस नेदी, सत्तर नेदी अथवा १०० नेदी पूजा करे, देरासर बनावे, प्रतिमाकी (उवारणा) करे, प्रातिहार्य शोना करे आचार्य, उपाध्याय, साधुको अन्न, वस्त्र, औषध, वसती प्रमुखका साहाय्य करे. बाल वृद्ध तपस्वी को औषध दे, तैल मर्दन करे, विलेपन अंग संवहन करे, बिस्तरा बिछावे, धर्मी २ खबर रखे, श्री संघमें दीन

दुखीको साहाय्य करे ॥ जीन पदके आराधनसे जीमूत वाहन जीन हुआ ॥

॥ इति षोडश पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ सप्तदश पदाराधन विधि. ॥



नमो चारित्र धारिणम् ॥ इस सत्रहवें पदका २० माला जप करके पीछे चारित्रका भेद प्रमाण वन्दना करे ॥ जैसे,–

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमण रूप चारित्र धरायनम ॥
२ सर्वतः मृषावाद विरमण रूप०
३ सर्वतः अदत्तादान विरमण रूप०
४ सर्वतः मैथुन विरमण रूप०
५ सर्वतः परिग्रह विरमण रूप०
६ सर्वतः रात्रिभोजन विरमण रूप०
७ इर्यासमिति सम्पन्न रूप०
८ भाषा समिति रूप०
९ एषणा समिति रूप०

१० आदानभाण्डमात्र निक्षेवणा समितिरूप०
११ परिष्ठापनिका समितिरूप०
१२ मनोगुप्तिरूप०
१३ वचनगुप्तिरूप०
१४ कायगुप्तिरूप०
१५ मनोदण्ड विरताय चारित्रधरायनम०
१६ वचनदण्ड रहिताय०
१७ कायदण्ड विरताय०

इस प्रकार वन्दना करके (लोगस्स १७ का काउस्सग) करे. पीछे चारित्रधर पदकी स्तुति करे. जैसे— चारित्रधर साधु पाच समिति तीन गुप्तिसे गुप्त स्वरूपमें रमता, इन्द्रियगणको दमन करता, सकल परभाव वमन करता, ध्यानानलसे कर्मेन्धनको जलाता, सर्व उपसर्ग परीषदकों क्षमासे सहन करता, नवीन २ अभिग्रह रूप तपका अनुष्ठान करके चारित्र धर्मको जमाता हुआ सदा गुरुचरणमें नमता, कदापि समताको नही

भोक्ता, यथावसर शुद्ध आहारके लिए भ्रमण करता, नव २ शास्त्रको पढता, प्रतिक्षण शुद्धोपयोग रखता, प्रतिक्षण तीर्थ श्रद्धा संवेग वैराग्यसे मिथ्यात्व मोहको हनता, शत्रु मित्रमे समचित्त, दिनरात सज्ञामें एकाकी सोये जागे अभिन्नरूप निस्पृहता, पृथिवीके समान सर्वसह, आकाशके समान निरालम्बन्, मेरुके समान अकम्प, चन्द्र इव सौम्य असिके समान तपसे गुप्तेन्द्रिय, बैल इव व्रत वहन समर्थ सिंह इव अङ्गीकृत निर्वाहक शंख इव निरञ्जन, कमल पत्र इव निर्लेप. इत्यादि गुणगणसे अलंकृत गात्र परमपात्र चारित्रधारी को वन्दन नमन सत्कार सन्मान करे वही दिन हमारा धन्य है उसीकी आज्ञा पालन करें क्रियाकी अनुमोदन करें वही हमारा परम गुरु है इत्यादि प्रकारसे स्तुति करके पारणाके दिन ५ मोदक रूपा वा सोना पर चारित्र गर्भित करके परमेश्वरके आगे रखे तथा चतुर्विध सघका द्रव्य भावसे भक्ति करे॥ उन्मार्ग गामीको,

सुमार्गमें लावे स्थिर करे ॥ संयम पदाराधनसे पुरन्दरराजा तीर्थंकर हुआ. ॥

॥ इति सप्तदश पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ अष्टादश पदाराधन विधि ॥



॥ नमो नाणस्स ॥ इस अठारहवें पदका २० माला जप करके पीछे आगमका बहुमान पूर्वक श्रुत प्रमाण वन्दना करे ॥ जैसे.—

१ श्री आचाराङ्ग सूत्राय नम.
२ श्री सूगडाङ्ग सू
३ श्री ठाणाङ्ग सू.
४ श्री समवायङ्ग सू
५ श्री भगवती सू.
६ श्री ज्ञाताधर्म सू
७ श्री उपाशक दशा सू.
८ श्री अन्तगम्दशा सू
९ श्री अनुत्तरोवाई सू
१० श्री प्रश्न व्याकरण सू.

११ श्री विपाक सू.
१२ श्री उववाई सू.
१३ श्री रायपसेणी सू.
१४ श्री जीवाभिगम सू.
१५ श्री पन्नवणा सू.
१६ श्री जम्बुद्दीप पन्नत्ती सू.
१७ श्री चन्दपन्नत्ती सू.
१८ श्री सूरपन्नत्ती सू.
१९ श्री निरयावली सू.
२० श्री पुष्पावली सू.
२१ श्री पुष्पचूलिया सू.
२२ श्री कल्पिका सू.
२३ श्री वन्हिदशा सू.
२४ श्री चउसरण सू.
२५ श्री संथारापइन्ना सू.
२६ श्री भत्तपइन्ना सू.

२७ श्री चन्द्राविज्जापइन्ना सू.
२८ श्री मरणविभत्ति पइन्ना सू.
२९ श्री गणि विज्जापइन्ना सू.
३० श्री तंडुलवेयालिय पइन्ना सू
३१ श्री देवेन्द्रस्तव पइन्ना सू
३२ श्री आउरपच्चरकाण पइन्ना सू
३३ श्री महापच्चक्काण पइन्ना सू
३४ श्री दश वैकालिक मूल सू
३५ श्री उत्तराध्ययन मूल सू
३६ श्री आवश्यक मूल सू.
३७ श्री पिण्डनिर्युक्ति मूल सू
३८ श्री व्यवहारछेद सू.
३९ श्री निशीथछेद सू
४० श्री महानिशीथछेद सू.
४१ श्री दशाश्रुतस्कन्धछेद सू
४२ श्री जीतकल्पछेद सू

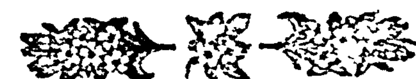
४३ श्री पंचकल्पह्वेद सू.
४४ श्री नन्दीचूलिका सू.
४५ श्री अनुयोगद्वार चूलिका सू.
४६ श्री स्यादस्तिरूपकायस्याद्वाद सू.
४७ श्री स्यानास्तिभङ्ग प्ररूपकाय स्याद्वाद सू.
४८ श्री स्यादस्तिनास्तिभंग प्ररूपकाय स्याद्वाद सू.
४९ श्री स्याद वक्तव्य भङ्ग प्ररूपकाय.
५० श्री स्यादस्ति अवक्तव्य भंग प्ररूपकाय.
५१ श्री स्यादनास्तिभंग प्ररूपकाय.
५२ श्री स्यादस्ति अव्यक्त भंग प्ररूपकाय.

इस प्रकारसे वन्दना करके (लोगस्स ५२ का काउस्सग) करे पीछे ज्ञानगुणकी स्तुति करे. जैसे– जगत्मे ज्ञान महा उपकारी है, ज्ञानही जगत्में निष्कारण बान्धव हितकारी सुखकारी है. ज्ञान मिथ्यात्व रूप अन्धकारको नाश करनेको सूर्य है, संसारसमुद्र तरनेको जहाज है, ज्ञान मनुष्यभवका रत्न है,

कुरूपका रूप ज्ञान है, ज्ञान परम देव है, ज्ञान अनन्त नेत्र है, ज्ञान देश विदेश सर्वत्र पूज्य है, ज्ञानसे सब दु:ख टूटता है. छठ अठम दशम प्रमुख उग्र तपस्या कारी अज्ञानीकी जो शुद्धता होती है उससे अनन्त गुण अधिक ज्ञानीको शुद्धता होती है करोडो भवमें अज्ञानीकों तपस्या करके जितना निर्जरा नही होती उतना ज्ञानी एक क्षणमें निर्जरा करता है. पेय अपेय, खाद्य अखाद्य, कर्तव्य अकर्तव्य, सेव्य असेव्य, हित अहित, लोक अलोक, स्व पर, गुण अगुण, इहलोक परलोक सत्य असत्य, द्रव्य, भाव, कारण कार्य, निश्चय व्यवहार, द्रव्य गुणपर्याय ध्यान ध्येय ध्याता ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता दान देवदाता सम्यग् असम्यग् स्वभाव परभाव ए सब सम्यग् स्याद्वाद शैलीमय आगम ज्ञान विना कोई तत्व नही पाता सर्व क्रियाका मूल श्रद्धा और श्रद्धाका मूल ज्ञान है प्रथम ज्ञान होवे तो श्रद्धा होती है इस लिए ज्ञानीका जीना सफल है, अज्ञानी-

का जीवन भव पूरण है इससे जो सम्यग् ज्ञानका अभ्यास करे सो धन्य है॥ इस कारणसे सम्यगज्ञानी कों हमारी नित्य वन्दना है हमारा सर्व सुखदाता ज्ञान है इत्यादि स्तुति करके पीछे पारणामें सम्यक् श्रुतदाता गुरुको वन्दना अङ्ग पूजा करे, धर्माचार्यको यथोचित् बहुमान करे, पुस्तक दे, ज्ञानका उपकरण दे, नूतन पुस्तक लिखावे ओली पर्यन्त नूतनशास्त्र सुने, आगम सूत्रका अर्थ सुने, जीर्ण भण्डारका रक्षा करे, प्रतिक्षण आत्मज्ञानमें मग्न रहे॥ ज्ञान पदाराधनसें सागरचन्द्र तीर्थंकर हुआ॥

॥ इति अष्टादश पदाराधन विधि ॥



॥ अथ अकोनविंशतितम पदाराधन विधि ॥

॥ नमो सुअनाणस्स ॥ इसपदका २० माला जप करके भक्ति भावित हृदय होकर श्रुत भेद याद करके वन्दना कर खमासणा दे. जैसे—

१ पर्याय श्रुतज्ञानाय नमः
२ पर्याय समास श्रुत.
३ अक्षर श्रुत
४ अक्षर श्रुत समास०
५ पदश्रुत
६ पदश्रुतसमास०
७ संघात श्रुत.
८ संघात श्रुत समास०
९ प्रतिपत्ति श्रुत
१० प्रतिपत्ति समास०

११ अनुयोग श्रुत.

१२ अनुयोग समास०

१३ श्रुत ज्ञानाय नमः

१४ श्रुत समास०

१५ बहुश्रुत.

१६ बहुश्रुत समास०

१७ पाहुम श्रुत.

१८ पाहुम समास०

१९ पूर्वश्रुत०

२० पूर्व समास श्रुत ज्ञानाय नमः

इस प्रकार वन्दना करके (लोगस्स २० का काउस्सग) करे पीछे श्रुतज्ञानकी स्तुति करे जैसे. शास्त्रमें श्रुत ज्ञानको भगवान जीने कहे है श्रुतधारी केवलीको उपमा पाता है, उत्तराध्ययन सूत्रमें बहुश्रुतकों बमी २ उपमा देकर वीरस्वामी अपने मुखसे कहा है, श्रुत ज्ञानस्वपरोपकारी है जिसकों श्रुताभ्यास नहीं

है वह अज्ञानी है, लोकमेंभी कहाजाता है कि हित कारक मूर्खसे पण्डित शत्रुभी अच्छा है, आगम श्रुत रूप समुन्द्र अपार है, जैसे समुद्र रत्नादि अनेक चीजेसे भरा है, वैसे श्रुत जलधि अनेक आम्नायसे भरा है, उसमें प्रथम आचाराङ्ग अठारह हजार पदहै और आचार्यकी वार्ता मुख्य है, आगे सुकृताङ्ग प्रमुख १० अङ्ग द्विगुण २ पद है पदका प्रमाण गाथासे जान लेना॥ ॥गाथा॥ यथा लक्खा अम्सङ्घ गयं, सहस्स सत्तेव अठ्ठ॥ उसीउकिटकालपय, भासियगणहार धारेहि॥ पय इकिकं अखर संख्या कोभियण सहस्सायं उवरिपम्न सय कोमी, कोमी चउतीसतह उवरि ॥ २ ॥ अर्थात् ३४८००१००० अक्षर एक पदमें होता है, और इग्यार ही अङ्गमें मत्र मिलकर ३६५४२००० पद होता है, बारहवा अङ्ग दृष्टिवाद है, उसका पार गणधरके सिवाय दूसरा नहीं पासक्ता. गणी पाठक कहाता है बारहवां अङ्गका अधिकार मात्र चौदह पूर्व है, उसमें प्रथम

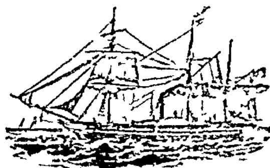
उत्पादपूर्व एक करोण पद है, उसमें सर्व द्रव्यका उत्पाद व्यय ध्रौव्यका परिज्ञान है, दूसरा अग्राणी पूर्व ए६ लाख पद है. उसमे सब बीजका मानो टोटल मिलाया है. तीसरा वीर्यप्रवाद पूर्व ७० लाखपद है, उस में बल प्रयत्न कार्य और बलवन्तका रूप वर्णन है, चौथा अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व ७ लाख पद है, उसमें कुल अस्तिनास्ति स्वभावरूप सप्तभङ्गी स्याद्वाद है स्वपरभङ्गका पात्र है, पांचवां ज्ञानप्रवाद पूर्व १ कोटि प्रमाण पद है मत्यादि पांच ज्ञानका स्वरूप भेद मुख्य है छटवां सत्य प्रवाद पूर्व १ पद्म कोटि प्रमाण सत्यादि भाषा स्वरूप सब भाषा भाषक वाच्य वाचिक स्वरूप है॥ सातवां आत्मप्रवाद पूर्व १ कोटि पद प्रमाण है उसमें आत्म द्रव्यका कर्तृत्व, भोक्तत्व, नित्यत्व, अनित्यत्वादि आत्मधर्मका स्वरूप है, आठवां कर्मप्रवाद पूर्व एक कोटि अस्सीलाख पद है, उसमें आठ कर्मके बन्धादि स्वरूप है, नवमां पच्चखान प्रवाद पूर्व ८४ लाख पद

प्रमाण है. उसमें पचक्खानका स्वरूप द्रव्य भावसे निश्चय व्यवहारसे है, और उपादेय प्रमुख सर्व शैली है ॥ दशमां विद्याप्रवाद पूर्व एक कोटि १0 लाखपद प्रमाण है, उसमें गुरु लघु अङ्गुष्ठ सेनारस्य सातसौ विद्या और रोहिणी प्रमुख पांचसौ महाविद्याओंका स्वरूप है। इग्यारहवां कल्याणनाम पूर्व २६ कोटि प्रमाण पद है उसमें सब ज्योतिषशास्त्र स्वरूप पुरुषको आश्रय करके चतुर्विध देवताका कल्याण जो पुण्यफल उसका स्वरूप है ॥ बारहवां प्राणवायु पूर्व १३ कोटिपदप्रमाण है उसमे आयुर्वेदकी प्रक्रिया कही है और प्राणादि १0 वायुका स्वरूप प्राणायामादि योगका स्वरूप कहा है। तेरहवां क्रियाविशाल नाम पूर्व ए कोटिपदप्रमाण है उसमें छन्दशास्त्र, शब्द शास्त्र सब शिल्प सकलकला तात्विक औपाधिक सब गुणोंका स्वरूप है। चौदहवां बिन्दुसारपूर्व १ कोटि ६0 लाखपद प्रमाण है उसमें कालि स्वरूप अष्ट व्यवहार

विधि, सर्व वस्तुका परिकर्म विधि, निःशेष श्रुत सम्पदा इत्यादि स्वरूप है॥ ए १४ पूर्व है, ऐसे ४ अधिकार और भी दृष्टिवादमें है। इस प्रकारका श्रुत जलधि स्याद्वादकी शैली चार अनुयोद्वार, सात मूल नय सातसो नयका उत्तरभेद दो मुख्य प्रमाण अनेक प्रमाणान्तर अनेक निक्षेप सप्तनयभङ्गी इत्यादि अनेक द्वार सहित एक एक पदकी व्याख्या है. जिसमें ऐसे श्रुतधारीका तुलना कौन कर सक्ता है. श्री जैनागमरूप श्रुत जलधि गुणरत्नसें भरा है, वह आगमाज्ञा हमारा परम तत्व है, उसका श्रवण पठन हमारा साध्यका दाता है इस लिए श्रुतको हमारी त्रिकाल वन्दना है. इस प्रकार स्तुति करके श्रुताराधन निमित (२0 लोगस्सका काउस्सग) करे. पारणामें श्रुतधारीका अङ्गपूजा वस्त्र आहारादि देव, सेवा करे, नया पुस्तकका भण्डार करे, पुस्तकका कर्पूरसे पूजन करे, धुप दे, पुराना ज्ञान भण्डार के पुस्तकोंका वस्त्र प्रमुखसें रक्षा करे, नवीन रूमाल

पाग ठवणी माला कांपी पाटी कलम स्याही प्रमुख ज्ञानोपकरण करावे, आप पढे पढावे, सुने सुनावे, आगमका बहुमान करे, यथाशक्ति क्रिया करे, सो आगम विरुद्ध न करे, अन्तङ्ग भक्ति करे व भाव भक्ति है. इस भक्तिको करनेसे अनन्त चतुष्टयीको प्राप्त होता है, और बहुमानसे ओली पर्यन्त नया २ शास्त्र पढे. इस प्रकार श्रुतपदके आराधनमे मनुष्यको ज्ञान प्राप्त होवे॥ श्रुतपदके आराधनसे रत्नचूड तीर्थंकर हुआ ॥

॥ इति एकोनविंशतितम पदाराधन विधि. ॥



॥ अथ विंशतीतम पदाराधन विधि ॥

॥ नमो तित्थस्स ॥ इस पदका २० माला जप करके साधक श्रावकके गुण प्रमाण खमासमणा देकर वन्दना करे. जैसेः—

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमणव्रते श्री साधुतीर्थाय नमः

२ सर्वतो मृषावाद विरमणव्रते श्री.

३ सर्वतोऽदत्तादान विरमणव्रते श्री.

४ सर्वतो मैथुन विरमणव्रते श्री.

५ सर्वतः परिग्रह विरमणव्रते श्री.

६ समस्त पृथ्वीकाय रक्षाकाय श्री.

७ समस्त अप्काय रक्षाकाय श्री.

८ समस्त तेजस्काय रक्षाकाय श्री.

९ समस्त वायुकाय रक्षाकाय श्री.

१० समस्त वनस्पतिकाय रक्षकाय श्री.
११ समस्त त्रसकाय रक्षकाय श्री.
१२ समस्त क्रोध दोष रहिताय श्री.
१३ समस्त मान दोष रहिताय श्री
१४ समस्त माया दोष रहिताय श्री.
१५ समस्त लोभ दोष रहिताय श्री
१६ समस्त रागांश विरताय समता युक्ताय श्री.
१७ समस्त द्वेष असुयादि दोष रहिताय सहजौदासिन्य गुण युक्ताय श्री साधु तीर्थाय नम॰ ॥ इति साधु गुणाः ॥

॥ अथ श्रावक गुणा ॥

१ समस्त सम्यग्गुणजननी गात्र लज्जा गुण युक्ताय सम्यग् देशविरति रूप श्री तीर्थ गुणाय नमः ।

२ दया गुण युक्ताय सम्यग् देशविरति रूप तीर्थ गुणाय नम॰

३ कुमति कदाग्रह कुयुक्ति पक्षपात रहिताय मध्यस्थ गुण युक्ताय०

४ मन वचन कायैः क्रूरता रहित सौम्यगुण युक्त देश०

५ समस्त विद्या सम्यग् गुण राग रूप सम्यग् देश.

६ क्षुद्रता रहित अति गम्भीरता उदारता सहित स्वपर भेद रहित सर्व जनोपकारक रूप अक्षुद्र तीर्थगुणाय नमः

७ पूर्व भवकृत दयाधर्म फल सर्वत्र दर्शनाय संघ प्रभावना हेतु रूप तीर्थ०

८ वर्जित पापकर्म जगन्मित्र सुखोपासनीय परमो परम कारण रूप सौम्य प्रकृति तीर्थगुणाय नमः।

९ देश क्षेत्र काल लोक धर्म विरुद्ध वर्जनरूप जन प्रिय तीर्थ०

१० मलिनक्लिष्ट भाव रहित सरल सदय मनोयोग रूप अक्रूर तीर्थ०

११ इह लोके परलोके वा रोग शोक जन्म जरा मरण दुर्गति पतन भयात् सदा धर्माधिकारि रूप पापकर्म भीरु तीर्थ०

१२ परावंचक सर्वजन विश्वसनीय प्रसंशनीय भावेकतान धर्मोद्यम रूप ६७ तीर्थगुणाय नमः

१३ प्राधान्येन परकार्य साधक सर्व जनोपादेय वचन रूप दाक्षिण्य तीर्थ

१४ सत्यधर्म ज्ञापक परद्वेष प्रकृति अनर्थ वर्जन रूप मध्यरूप तीर्थ

१५ धर्मतत्व ज्ञापक शुभ कथाकारि विवेक गुणोद्दीपक अशुभ कथा वर्जक रूप सत्कथा तीर्थ

१६ स्वयं धर्मशील सदानुकूल परिवार विघ्न रहित धर्म साधन रूप तीर्थ

१७ अतीतानागत वर्त्तमान हित हेतु कार्यदर्शक सर्वथा स्वविहित कार्य करण रूप दीर्घदर्शी तीर्थ०

१७ सर्व पदार्थ गुण दोष ज्ञापक सुसंगति बोधक रूप विशेषज्ञ तीर्थ०

१९ वृद्ध परंपरा ज्ञापक सुसंगति रूप वृद्धानुगत तीर्थ.

२० सर्व गुण मूल रत्नत्रयी तत्वत्रयी शुद्धता प्रापक रूप विनय तीर्थ०

२१ धर्माचार्यस्य बहुमान कर्ता स्वल्पोपकारमपि अविस्मर्ता परगुण योजनोपकार करण सदा परहितोपदेशकरण कारण रूप परहितकारि तीर्थ०

२२ अल्प बहुश्रुत तप क्रियादि योग्यता ज्ञापक, यथानुकूल धर्म प्रापक, सर्व स्वकार्य साक्षिरूप लब्ध लक्ष तीर्थ०

इत्यादि प्रकारसे स्तुति करके वन्दना करे, पीछे (३७ लोगस्सका काउस्सग) एकाग्र चित्तसे करे. पुनः पदकी स्तुति करे. जैसे—तीर्थ किसको कहते है बडी नदी अगाध वहती हो उसको सब जगह नहीं उतरा जाता किन्तु जिस जगह घाट होता है वहां उतरा

जाता है उसीको घाट या उतारा कहाजाता है, वह घाट व्यन्तराधिष्ठित होवे अथवा कोई देव किसीको प्रसन्न हुआ हो तो वह घाट तीर्थ कहा जाता है, और वहां मिथ्यात्वी संसारी लोग स्नानादि क्रिया करते है और अनेक प्रकारके मूढ क्रिया करते है सो द्रव्य तीर्थ है ॥ और चतुर्विध संघ भावतीर्थ है, क्योंकि कर्म संसाररूप बमा दरिआ है उसको पार उतरनेका घाट सुखोत्तार है. अनादि संसार भ्रमणजनित श्रम तापकी हानी होती है, और अनन्तानुबन्धी प्रमुख कषाय रूप अति तृष्णा (प्यास) लगी है सो शान्त होती है, और कर्ममल धोया जाता है, विशुद्धाध्यवसाय रूप नौकापर जो चढता है सो क्षणमात्र उस दरिआको पार पहुचता है नही तो जिस जगह गहरा घाट होवे वहां नावभी होवे तो तरना मुस्किल होता है. इहां भावतीर्थ घाटमें अनुत्कट अध्यवसायवानकों तारनेके लिए सर्वविरति देशविरति नाव है उसके

अवलम्बनसे मनुष्य पार उतर जाता है. इससे संसार रूप दरिआके पार पहुंचानेका यही नाव है और सुरासुरसे वन्दित चरण ऐसे यतितीर्थ है. और इसी यतिरूप तीर्थका सेवन हमारा परम साधन है. यही तीर्थ सुखका स्थान है. इसीके संगसे सर्व कर्म नष्ट होवेंगे, इसीके संगसे सब आध्यात्मिक ६ सम्पदा मिलेगी. इस वास्ते हमको इसी तीर्थका सेवन परम धर्म करणीय है ॥ इत्यादि स्तुति करके श्री तीर्थ प्रभावक पूर्व पुरुष साधक श्रावकको भोजन कराय अनुमोदन करे, पारणामें सामीवत्सल प्रभावना करे, अमारीका पटह बजावे, श्री संघ सहित तीर्थयात्रा रथयात्रा करे, अथवा १७ प्रकारी २१ प्रकारी १०८ प्रकारी वा यथा शक्ति पूजा करावे जिस प्रकार जीव धर्मको अनुमोदन करे, धर्मको स्वीकार करे. वैसी उन्नति करे अथवा जिन बिम्ब बनावे, प्रतिष्ठा करावे, साते क्षेत्रकी उन्नति करे, संघमे दुखीको साहाय्य करे ४५ आगम सूत्रसे अथवा

अर्थ सहित यथायोग्य श्रवण पठन करे पढने वालेको आहार वस्त्र औषध प्रमुखका साहाय्य करे, बलहीनका वैयावृत्ति करे (सेवा) तपस्वीका सेवा सम्यग् गुण युक्त पुरुषका यश प्रतिष्ठा बढावे, जीर्णोद्धार करावे. ए सब क्रियाको आगमके नियमानुसर हम व्यर्थ कष्ट करते है एसा भावसे रहित होकर तथा मान दम्भ से रहित होकर मूढता पश्चात्ताप दृष्टिराग रहित होकर केवल मोक्षार्थ अनुत्कण्ठासे तीर्थश्रद्धा संवेग भावसे परम हर्षमे भरा और परम लाभ मानता वार २ अनुमोदन करता अपने शक्तिमें न्यूनता नही समझता निशद्व जो क्रिया करता है उसका सर्व कर्म नष्ट होता है. और वह अक्षय अविनाशीपदको प्राप्त होता है इसी तरह वीसो पदका आराधन करे एक २ पदका प्रभावना उत्सव करे और जब २० ओली पुरी होतो यथाशक्ति उजमना करे और साधर्मी वत्सल करे. चतुर्विधसंघको घर मेलाकर बहुमान सत्कार करे,

साधर्मिको वस्त्रादि रूप पहिरावनी करें प्रभु गुण गायकको उदार चित्तसे दान देवे, देव गुरु धर्माचार्यका पधरावनी करे ५ गुणींको दान देवे ए सब क्रिया करके ४०० उत्तम मोदक रूपा सोना अथवा रत्न गर्भित करके साधर्मिकों देवे, उस मोदकमे एकभी दूसरे धर्मवालेकों धर्म समझ कर न देवे, न देना उचित है. इस विधिसे शुद्ध श्रद्धावान वीसस्थानका तप आराधन करे तो इस लोकमें मान मुहब्बत लज्जा प्रतिष्ठा सुख सौभाग्य अनेक विध ऋद्धि विलास पावे, परभव में देवलोकका सुख अनुभव करके तीसरे भवमें सकल सुरासुर वन्दनीय पूजनीय तीर्थङ्कर पदकों पावे ॥ समस्त कर्म क्षय करके केवलज्ञान दर्शन चारित्र पाकर शाश्वत सुखको अनुभव करे ॥ तीर्थपदके आराधनसे मेरुप्रभ तीर्थङ्कर हुआ ॥

॥ इति श्री वीस स्थानक तपोविधि. ॥ ओम् ॥

॥ अथ वीस स्थानक चैत्यवन्दन ॥

अतिशयवन्त महान्तरूप, अनुपम गुणधारी।
आराधे जिनकुं सकल, तीर्थंकर शिवगामी ॥ १ ॥
अरिहन्त सिद्ध प्रवचन गणी, स्थिर बहुश्रुत जान।
तपसी श्रुत दर्शन विनय, आवश्यक वलि दान ॥ २ ॥
शील क्रिया तप धारिए, वैयावच्च समाधि।
ज्ञान ग्रहण श्रुत भक्ति तीर्थ, सेवन त्याग उपाधि ॥३॥
ए विंशति स्थानक अमल, सेवो सरधा युक्त।
परमातम संपद प्रगट, कारक बन्धन मुक्त ॥ ४ ॥
मन वांछित सह सिद्धकर, ज्ञायिक सुखभर कन्द;
जिनको वन्दे भावधर, श्रीकुशलेन्दु गणिंद ॥ ५ ॥

॥ इति चैत्यवन्दनम ॥

निरमल आतम भाव प्रकाशक,
कारक क्षायिक भावीजी;
जिनपद वर्धक कर्म निकन्दक,
विस स्थानक भवि सेवोजी;
जिनवर सहु जे स्थानक सेवे,
एक अनेक भव तीजे जी;
आराधन ते साधत भावे,
मनवांछित सब सीझेजी ॥ १ ॥

अरिहन्त सिद्ध प्रवचन आचारज,
स्थविर बहुश्रुत तपसीजी;
श्रुत दरसन विनयी आवश्यक,
शील क्रिया तपवासीजी;
गणधर वैयावच्च सुसमाधी,
ज्ञान ग्रहण श्रुत भगतीजी;
प्रवचन ए विशंतिपद भाषक,
जिन नमिए सहु जुगतीजी ॥ २ ॥

अष्ठम छठ उपवास आंबिल तप.
एकाशन निज सगतेजी,
करिए ओली षट मास भीतर,
आराधन बहु भगतेजी;
आरम्भ टाली पोषध धारी,
दोय सहस जप गणिएजी,
काउसग्ग निज पद परिमाणें,
देव पूजन श्रुत भणिएजी ॥ ३ ॥
शासन रक्त समकितधारी,
जे सहु सुर सुरिन्दाजी,
सानिध करज्यो ते तप करता,
वधते भाव अमन्दाजी,
श्री जिनलाभ सुरीश्वर शाखा,
श्री कुशलेन्दु गणिदाजी;
तस पद सेवक मंगल पति गणि,
जंपे श्री बालचन्दाजी ॥ ४ ॥

॥ अथ वीसथानकजीकी थुई लिखिए ॥

अरिहन्त सिद्ध पवयण, आचारज थिवरांण;
चारित्त ब्रह्म किरिया तप गोयम जिनज्ञाण;
संयम १७ नाणी १८ श्रुत १९ संघर सेवो वीसगण ।१।
उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर,
वलि काल जघन्ये जिनवर वीस गम्भीर;
जिन थाय अनन्ता अतीत अनागत काल,
ए वीसे थानक आराधी गुणमाल. ॥ २ ॥
आवश्यक बे वेला जिन वन्दन त्रिकाल,
थानक तप गिणवौ सहस दोय सुकुमाल;
काउसग्ग गुण स्तवना पूजा प्रभावना सार,
इम सामीवछल करता भवनो पार. ॥ ३ ॥
समरीजे अहिनिस गुण एगो सुर साथा,
जद जदानी सुरपति वेयावच्च करताथा;
थानक तपविधि सुजे सेवे मन रंगे,
देवचन्द आणाये सानिध करे तसु चंगे. ॥ ४ ॥

॥ इति थुइ. ॥

॥ अथ वीसथानककी सज्झाइ ॥
॥ वीर सुणो मेरी वीनती एनी टाल ॥

विसथानक तप सेविजे, भव्य प्राणीरे आणी मन भाव;
श्री अरिहन्त इम उपदिसे, ए तप तारे मोक्ष परभाव वी०१
नमो अरिहन्ताणं गुणो पद, पहिलेरे मन हरप अपार,
ड्व्यत भावत भेदसुं, जिनपूजारे करो आठ प्रकार. वी०२
नमो सिद्धाणं एहवो, सुद्ध चित्तेरे गुणो बीजी ठांण,
आराधो सिधचक्रनो, जिन थायरे निज जनम प्रमाण वी३
पवयणस्स नमो गुणो तीजे ठांणेरे करो नाण अभ्यास;
भगति करो सिद्धान्तनी जिम पावोरे तुम लिलविलास.
॥ वी० ४ ॥
आयरियाणंनमो गुणो, चौथे बोलेरे पूजो गुरुना पाय,
नमो थेराणं पञ्चमे, गुणौ सेवोरे धरमी मुनिराय वी० ५
पंम्डित गुरुने पूजिए, छठ्ठे गुणिएरे नमो उवझाय,
नमो सव्वसाहु सातमे, वलि भेवोरे तपसी बहु जाण वी.
नमो नाणीण आठमें, गु णे भणिएरे नवातत् सिध्णय;

नमो दंशण धारों गुणों, पाले नवमेंरे समकित सुखदाय.
वी. ॥ ७ ॥

विनय संपन्न नमो इसो, पद दशमेरे गुणिए शुभ ध्यान;
विनय करो गुणवन्तनो, इण रीते हो लहीए शिव.
थान वी. ॥ ८ ॥

इग्यारम थानक गुणो, पडिक्कमणां रे सांझ सवार;
चारित्रस्स नमोइसो, पद ध्यावो रे शिवसुख दातार वी.९

गुणों बंभयारीणं नमो, आठ पोहोरीरे करो पोसह लील;
बारमें ठाणाई पालिए, शुभ भावेरे निरमल गुण शील.
वी. ॥ १० ॥

नमो किरियाधारी भणी, मन गुणीएरे नित तेरमें ठांण;
सामायिक पिण लिजिए, दोष टालोरे बत्रीस प्रमाण
वी. ॥ ११ ॥

तप अधिको करो चवदमे, नमो तवसीरे गुणिए मनरंग;
तपसी सेवा कीजिए, वलि रहिएरे तपसीने संग वी.॥१२॥

———

(ढाल थंजनपुरी)

अतिथदान बहुभावे दीजे, नमो गोयमाईण गुणिजे;
पनरमो किरिया एह, प्रतिमांनूं भूपण पहिरावो,
नमो जिणाणं ए पद ध्यावो, सोलमें धर्म सनेह ॥१३॥
अठपोहरी पोसो विधि करिए, ध्यान नमो चारित्तस्स
धरीये,
एविसतरमठांणा नवो नांण, उठरगे भणिये नमो नाणय,
गुणणो गुणीये अठारमे परिमान ॥ १४ ॥
नमो सुयस्स गुणो मन चंगे, पुस्तक पूज करो बहुरंगे,
ए उगुणो समरी ते नमो, तिथरा यान धरावो संघ.
चतुर्विध भगति करावी, वीसमे शास्त्र विदीत ॥ १५ ॥
ढाल दोयन्ण स्तुप्रते कैरे, गुणिये गुणाणो सुविशेषे,
च्यारसौ उपवास पूरी ज्यारे, समकित गुण शुद्ध धरीजे१६
ए वीस स्थानक विधि जानी रे, सेवो मननु ध्ट आणी,
विधि तुम्हे ए तप हीयरे, सो तीरथंकर पद लहीये,
भावे स्तव चारित्रधारी रे द्रव्य भाव विधि सागरी सेवे.

जे नरने नारीरे ते मोक्षतणा अधिकारी. ॥ १७ ॥
इम विसथानक तपतणी विधि शास्त्रने अनुसार ए;
जे वहे नरने नारी विधिसुं धन्य तसु अवतार ए,
श्री रतनपुरवर संघ सुप्रकार जगतनाथ जिणेसरो,
तसु चरणपंकज प्रणमि भावे कहे वसतो मुनिवरो. १८

॥ इति वीस थानक सिझाय संपूर्ण. ॥

॥ अथ वीसस्थानकनुं चैत्यवन्दन. ॥

पहिले पद अरिहन्त नमुं, बीजे सरव सिद्ध ।
त्रिजे प्रवचन मन धरो, आचारज अरु सिद्ध ॥१॥
नमो थेराणं पांचमें, पाठक गुण छठे ।
नमोलोए सव्वसाहूणं, जे छे गुण गरीठ्ठे ॥ २ ॥
नमो नाणस्स आठमें, दरशन मन भावो ।
विनय करो गुणवन्तनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥
बंभवयधारीणं, तेरमे किरीयाणं ।
नमो तवस्सजानी जिन उत्तमपद पद्मने, नमतां होय सुखखानी ॥ ५ ॥

॥ वीस स्थानक चैत्यवन्दन ॥

चौविस पंदर पिसतालिसनो, छत्रीसनो करिये ।
दश पचवीस सत्ताविसनो, काउस्सग्गमन धरिये ॥१॥
पंच सम्सठ दशवली सीत्तेर, नव पणवीस बार अठवीस,
लोग्गस्स तणो काउस्सग्ग धरो गुणस्स ॥२॥
वीस सीत्तर इगवन द्वादश ने पंच, एणीपरें काउस्सग्ग
जो करे, तो जाये भव संच ॥ ३ ॥
अनुक्रमें काउस्सग मन गुनि, लेजे वीसथानक एम;
जानिये संक्षेपथी लेस भाव धरी मनमां धनोए,
जो एक पद आराधे जिन उत्तम पद पद्मने नमि निज
कारज साधे ॥४॥

॥ वीस स्थानकना तपनी स्तुति ॥

पूछे गोतम वीर जिणंदा, समवसरण बैठ सुखकंदा,
पूजित अमर सुरीन्दा, केम निकाचे पद जिनचन्दा,
कीनविध तप करता भवफन्दा, टाले दुरितह दंदा,
तव भाखे प्रभुजी गतनिंदा, सुण गोतम वसुभूति नन्दा,

निरमल तप अरविंदा, वीसथानक तप करत महिंदा,
जिम तारक समुदाये वृंदा, तिम ए सवी तप इंदा,॥१॥
प्रथमपदे अरिहन्त नमीजे, बीजे सिद्ध पवयणपद त्रीजे,
आचारज थेर ठवीजे, उपाध्यायने साधु ग्रहिजे,
नाण दंसनपद विनय वहीजे, अगीआरमें चारित्र लीजे,
बंभवयधारीणं गणीजे, किरीयाणं तवस्स करीजे,
गोयम जिणाणं लहीजे, चारित्र नाण श्रुत तीथ्थस्स कीजे,
त्रीजे भव तप करत खुणिजे, ए सबी जिन तप लीजे.२
आदि नमो पद सघले ठवीस, बार पन्नर बारवली छत्रीस.
दश पणवीस सगबीस, पांच ने सम्सठ तेर गनीस
सत्तर नव किरिया पचबीस, बार अठावीस चउवीस;
सीत्तेर इगवन्न पीतालीस, पांच लोगस्स काउसग्ग रहिस,
नोकरवाली बीस, एक २ पदे उपवासज बीस,
मास खटें एक उनीं करीस, इम सिद्धान्त जगीस,॥३॥
शक्तें एकासणुं तीबीहार, छठ अठम मासखमण उदार,
पम्किमणां दोय बार, इत्यादिक विधि गुरुगम धार,

एकपद आराधन भवपार, उजमणुं विविध प्रकार,
मातंग यक्ष करे मनोहार, देवी सीध्धाइ शासन रखवार,
संघ वीघन अपहार, खीमावीजेय जस उपर प्यार,
शुभ भवीयन धरमी आधार, वीर वीजे जयकार ॥७॥

। इति ।   ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

हांरे म्हार प्रणमु सरसति मांगू वचन वीलासजो ।
वासेरे तप थानक महिमां गांइसेरे लो ॥
हां० प्रथम अरिहंतपद लोगस्स चोवीस जो ।
बीजेरे सिद्ध थानक पन्नर भावसुरेलो ॥ १ ॥
हां० त्रीजे पवयण गुणणासो लोगस्स सात जो ।
चोथेरे आयरियाणं छत्रिसनो महिरेलो ॥
हां० थेराणु पद पंचमे दस उदारजो ।
छठेरे उवझायाणं पंचवीसनो सहीरे लो ॥ २ ॥
हां० सातमे नमो लोए सव्व साहु सत्ताविसजो ।
आठमे नमो नाणस्स पंचभावसुरेलो ॥
हां० नवमे दसिणस्स सडसठ मनने उदारजो ।

दशमें नमो विनय सद्सवपाणीएरलो ॥ ३ ॥
हां० इग्यारमें नमो चारित्र लोगस्स सत्तर जो ।
बारमें नमो बंभस्स नवगुणे सहिरे लो ॥
हां० किरियाणं पद तेरमें वलि पचवीस जो ।
चौदमें नमो तवस्स बार गुणे सहीरे लो ॥ ४ ॥
हां० पन्नरमें नमो गोयमस्स अट्ठावीस जो ।
नमो जिनाय चौवीस गणसुं सोलमेंरे लो ॥
हां० सत्तरमें नमो चारित्र लोगस्स सित्तर जो ।
नाणस्सनो पद गणसुं एकावन अढारमेंरे लो. ॥ ५ ॥
हां० उगणीसमे नमो सुयवंस पिताळीस जो ।
वीसमे नमो तित्थस्स वीसे भावसुं रे लो ॥
हां० तपनो महिमा चारसे उपर वीसजो ।
षटमासे एक ओली पूरी कीजिएरे लो ॥ ६ ॥
हां० तप करतां वली गणिए दोए हजार जो ।
नोकरवाली वीसे थानक भावशुं रे लो ॥
हां० परभावणा संघ सामीवछल सारजो ।

उजमणा विधि कीजिये विनय लीजीए रे लो ॥ ७ ॥
हां० तपनो महिमा कह्यो श्री वीर जिनरायजो ।
विस्तारे इगसमय गोयमस्वामनेरे लो ॥
हां तप करतां वली तीर्थंकरपद होए जो ।
देव गुरु इम कंती तवन सोहामणोरे लो ॥ ८ ॥

॥ इति श्री वीसस्थानक स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ श्री सीमन्धर साहिबा ए देशी ॥

वीसथानक पद सेवियें । धरकर शुभ परणाम लालरे ।
तीजे भव सेव्यो थको । बांधे तीर्थंकर नाम लालरे वी ।१।
तप रचना अधकी कही । ज्ञाता अंगमझार लालरे
सुणिज्यो भवि तुमे भावसुं । किंचित करियें उच्चार
लालरे । वी. २ ।
सुविहित गुरु पासे गहे, वीसथानक तप एह लालरे ।
निरदूषण शुभ मुहरते, उचरी जैमे सनेह लालरे ।वी.३
अरिहन्त सिद्ध प्रवचन नमुं । सुरि थिवर उवझाय लालरे ।
साधु नाणदंसण श्रुत । विनय नमुं उलमाय लालरे ।४।

चारित्र बंभ क्रियापदे । तप गोयम जिन वीस लालरे ।
चारित्र ग्यानने श्रुत भणी । नमुं तीर्थंकर ईश लालरे ॥ वी. ॥ ५ ॥

वीस दिवसमें एकही । पद गुणणौ कर भाव लालरे ।
अथवा दिन वीसां लगे । वीसुंपदगुण मेव लालरे । वी. ६ ।

एक भली षटमासमें । पूरी ज्यो नवि होय लालरे ।
फेरन नंदनवि करणी पडे । लारलीनि फल थाय लालरे ॥ वी. ॥ ७ ॥

छठ अठम उपवाससुं । अथवा अपनी शक्ति लालरे ।
पोसह करि आराधिए । देव वांदे निज भक्ति लालरे । वी. ८ ।

संपुरण पद सेवता । पोसहरो नहि जोग लालरे ।
तोही सात पदें सही । पोसह करिये संयोग लालरे । वी. ९ ।

सूरि पाठक थविरें पदें । साधु चारित्र सुजांण लालरे ।
गोतम तीर्थपदे सही । ए साते परमाण लालरे । वी. १०

पद पदं दीठ करे सदा । दोय दोय जाप हजार लालरे ।
पडिकमणो दोय टंकही । करीये पूजा सार लालरे । वी. ११ ।

शक्ति मुजब तप कीजिए। एक ओली अखवीस लालरे।
वीसावीसी च्यारसें। तप संख्या कहि ईश लालरे।वी १२।
जिण दिन जिसपद तप करे। तिणके गुण चित्त धार
लालरे।
काउस्सग परदक्षिणा।मुख भणिये नमस्कारलालरे।वी १३।
जिनपदकी स्तवना सुणौ। कीजे जिण भक्ति लालरे।
राती जोगो किजिये। खरचीजै धन शक्ति लालरे। वी १४।
मृतक जन मरितुकालमें। वलि धारयो उपवास लालरे।
सो लेखे नही लेखवी, निकेवल तप जास लालरे।वी १५।
सावद्य त्यागपणौ करे। शोक न धारे चित्त लालरे।
शील आभूषण आदरे। मुखसूं बोले सत्य लालरे।वी १६।
जेठ आषाढ वैशाखमे। मिगसर फागण माघ लालरे।
ए षट मासे मांहिने। व्रत ग्रहिये वमभाग लालरे।वी १७।
तप पूरण हूआ थकां। उजमणे निरधार लालरे।
कीजे शक्ति विचारनें। उछव विविध प्रकार लालरे।वी.१८।

रूमो कारज कीधो धन खरची जग जस लीधोरे.सा.८ वी.
श्रीजिन महेन्द्रसूरिन्दा नितबांधे कीर्त्ति आनंदारे.सा.९

इति श्री वीसस्थानक लघु स्तवनं श्री काशीदेश
वाराणसी नगर्यां श्री पार्श्वजिन प्रासादात्
सुश्राविका मुन्नाजी वाचनार्थं
श्रेयोर्थं शुभम् ॥

बृहत्खरतर भट्टारक गणाधीश श्री जं । यु । प्र । भ । श्री जिन महेन्द्रसूरि जिना पद्म प्रभाकर जंगमयुग प्रधान सकल भट्टारक शिरोमणि श्री जिनमुक्ति सूरिजी विजयराज्ये वाचनाचार्य सत्यमाणिक गणि । शिष्य पण्डित माणिक्यसुन्दर मुनिशिष्येण कृष्णाचन्द्र संतोषचन्द्रेण लिखितः ॥



આ ચોપડીની આશાતના ન થાય
માટે સંભાળીને રાખવા સર્વ બંધુ-
ઓને ખાસ વિનંતિ છે